संवाद सेतु

मीडिया का आत्मावलोकन

अंक 27 पृष्ठ 25 दिसंबर, 2022 नई दिल्ली

संचारीय-संघर्ष का विश्वकप

संपादकीय

संपादक

आशुतोष भटनागर

कार्यकारी-संपादक

डॉ. जयप्रकाश सिंह

उप-संपादक

डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

डिजाइनिंग

तिलक राज

ई-मेल :

samvadsetu2011@gmail.com

फेसबुक पेज

@samvadsetu2011

अनुरोध

संवादसेतु की इस पहल पर आपकी टिप्पणी एवं सुझावों का स्वागत है। अपनी टिप्पणी एवं सुझाव कृपया उपरोक्त ई-मेल पर अवश्य भेजें।

'संवादसेतु' मीडिया सरोकारों से जुड़े पत्रकारों की रचनात्मक पहल है। 'संवादसेतु' अपने लेखकों तथा विषय की स्पष्टता के लिए इंटरनेट से ली गई सामग्री के रचनाकारों का भी आभार व्यक्त करता है। इसमें सभी पद अवैतनिक हैं।

अनुक्रम

आवरण कथा

संचारीय -संघर्ष का विश्वकप

(पृष्ठ 4-5-6)

विमर्श

रंग : एक भाव तकनीक

(पृष्ठ 7-8-9)

जम्मू-कश्मीर

द कश्मीर फाइल्स : झूठ को बेचैन करती कहानी

(पृष्ठ 10-11-12)

नवीन-मीडिया

चयनित विरोध की घातक रणनीति

(पृष्ठ 13-14-15)

ग्लोबल मीडिया

नील गगन में नीली चिड़िया

(पृष्ठ 16-17-18)

फिल्म समीक्षा

कंतारा : फिल्म बताती है कि परंपराएं तोड़ने और छोड़ने के लिए नहीं, सेलिब्रेट करने के लिए हैं!

(पृष्ठ 19)

टर्म - ब्लू टिक

कीमत चुकाकर मिलेगा भरोसे का ब्लू 'टिक'

(पृष्ठ 20-21)

मीडिया हलचल

शंघाई में विरोध-प्रदर्शन कवर कर रहे बीबीसी पत्रकार एड लॉरेंस पर हमला

(पृष्ठ 22-23-24-25)

कतर में आयोजित फीफा विश्वकप से पहले यह अनुमान लगाना भी असंभव था कि खेल के किसी आयोजन का उपयोग भी सभ्यतागत टकराव के लिए किया जा सकता है। लेकिन फीफा विश्वकप के शुरू होने के साथ परत-दर-परत यह सच्चाई सामने आने लगी कि यह खेल आयोजन एक नए किस्म के संघर्ष में तबदील हो गया है। संचार-प्रक्रिया के माध्यम से कैसे इस आयोजन में सभ्यताएं टकरा रही हैं, इसी का लेखा-जोखा इस अंक में करने की कोशिश की गई है...

अभी तक की सामान्य समझ यह है कि सभ्यतागत टकराव मुख्यत: युद्धों के रूप में खुद को अभिव्यक्त करता है। यह पूरी तरह गलत नहीं है, लेकिन इसे टकराव को समझने का एक सीमित दृष्टिकोण माना जा सकता है। वास्तविकता यह है कि सभ्यताएं अगल-अलग मोर्चों पर टकराती और संवाद करती हैं। टकराव और संवाद के इन मोर्चों की पहचान करना एक जरूरी बौद्धिक कर्म बन जाता है, क्योंकि सही मोर्चे की पहचान की स्थिति में ही सार्थक हस्तक्षेप संभव होता है।

कतर में आयोजित फीफा विश्वकप से पहले यह अनुमान लगाना भी असंभव था कि खेल के किसी आयोजन का उपयोग भी सभ्यतागत टकराव के लिए किया जा सकता है। लेकिन फीफा विश्वकप के शुरू होने के साथ परत-दर-परत यह सच्चाई सामने आने लगी कि यह खेल आयोजन एक नए किस्म के संघर्ष में तबदील हो गया है। संचार-प्रक्रिया के माध्यम से कैसे इस आयोजन में सभ्यताएं टकरा रही हैं, इसी का लेखा-जोखा इस अंक में करने की कोशिश की गई है।

रंगों की दुनिया अपना संचार कैसे करती है और रंग संचारीय प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करते हैं, इसे समझने की कोशिश इस बार 'विमर्श' स्तंभ में की गई है। लेखक की यह स्थापना कि यदि दुनिया में रंग न होते तो केवल रेखाएं भर बचतीं और वह नीरस हो जाती, एक दार्शनिक टिप्पणी से अधिक संचारीय मान्यता प्रतीत होती है। रंगों की दुनिया में संचार कैसे होता है और रंग कैसे संचार करते हैं, इसे समझने का मौलिक प्रयास यहां पर किया गया है।

एलन मस्क द्वारा ट्विटर का अधिग्रहण व सूचना की वैश्विक पारिस्थिकी को प्रभावित करना नया घटनाक्रम है। गूगल और एप्पल के एपस्टोर से ट्विटर को हटाने की दुराग्रहों के बीच ट्विटर की नीली चीड़िया क्या उन्मुक्त होकर विचारों के नीले आसमान में विचरण कर सकेगी, इस पर सभी की निगाहें टिकी हैं। स्पष्ट है कि ट्विटर ही नहीं, पूरा वैश्विक सूचना प्रवाह बदलाव के बदलाव के नए मुहाने पर खड़ा है।

संवादसेतु के इस अंक में भारतीय संचारतंत्र में घर कर चुकी चयनित चुप्पी के अमानवीय चेहरे को सामने लाने की कोशिश हुई है। धर्म और जाति विशेष से संबंधित मुद्दों पर अति-सक्रियता अथवा घनघोर चुप्पी एक ऐसा यथार्थ है, जिस पर अब बहस से नहीं बचा जा सकता।

एक ऐसे दौर मे जब दर्शक स्थापित यथार्थों को नए सिरे से समझने-परखने की कोशिश कर रहे हैं, तब फिल्मी दुनिया में यथास्थिति बनाए रखने के जो प्रयास हो रहे हैं, उसकी भी समीक्षा संवादसेतु के इस अंक में की गई है। 'कश्मीर फाइल्स' में दिखाए गए तथ्यों पर चर्चा करने बजाय उसे सिरे से खारिज करने के प्रयास अब स्वयं को ही बचकाना साबित कर रहे हैं। यहां पर इस बात की छानबीन भी आवश्यक हो जाती है कि भारतीय मंचों पर अब भी कैसे कला से अधिक कला की राजनीति करने वाले विशेषज्ञों की जगह मिल जाती है। संवादसेतु की इस अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रियाएं इसे अधिक परिष्कृत करने में सहायक बनेंगी, इसी अपेक्षा के साथ!

आपका संपादक

आशुतोष भटनागर

संचारीय-संघर्ष का विश्वकप

चित्र : गूगल-इमेज से साभार

❐ डॉ. जयप्रकाश सिंह

खेल आयोजन समय-समय पर वैचारिक खेमेबंदी का शिकार होते रहे हैं। यह भी सही है कि प्रतिस्पर्धी हितों वाले राष्ट्र खेल आयोजनों का उपयोग मनमाफिक संदेश देने के लिए करते रहे हैं। लेकिन यह संभवत: पहला मौका है जब किसी खेल आयोजन का उपयोग पांथिक और सभ्यतागत संदेशों को पहुंचाने और छवियों को गढ़ने के लिए किया जा रहा है। इसी कारण कतर में होने वाला फीफा विश्वकप संचारीय संघर्ष का मैदान बन गया है। अभी कतर में 'क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन' खेल के मैदान तक पहुंच गया है और वह 'क्लैश और कम्युनिकेशन' के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त कर रहा है।

अभी कतर में 'क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन' खेल के मैदान तक पहुंच गया है और वह 'क्लैश और कम्युनिकेशन' के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त कर रहा है...

खेलों के इतिहास पर नजर डालें तो 1936 के बर्लिन ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेल ऐसा पहला बड़ा खेल आयोजन था, जिसका उपयोग वैचारिक खेमेबंदी और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लिए खुलकर किया गया। एडोल्फ हिटलर और उनकी दुष्प्रचार मशीनरी ने इस खेल आयोजन का उपयोग सर्वश्रेष्ठ नस्ल के सिद्धांत को स्थापित करने के लिए किया था, लेकिन जेसी आवेन्स और मेजर ध्यानचंद जैसे खिलाड़ियों के असाधारण प्रदर्शन ने जर्मन सर्वश्रेष्ठता के दावे को ध्वस्त कर दिया था। इसी तरह, 1956 में मेलबर्न में आयोजित ओलंपिक खेलों का कई देशों ने बहिष्कार किया था। सोवियत संघ के हंगरी पर आक्रमण, ताईवान की स्वतंत्र देश के रूप में सहभागिता और स्वेज नहर के लेकर हुए टकराव के कारण कई देशों ने मेलबर्न ओलंपिक का बहिष्कार किया था। फुटबाल की दृष्टि से देखें तो 1966 का फीफा विश्वकप ऐसा पहला विश्वकप था, जिसका अफ्रीकी महाद्वीप के सभी देशों ने बहिष्कार करने का निर्णय लिया था।

इस संचारीय संघर्ष की शुरुआत 2010 में ही हो गई थी, जब फीफा ने 2022 का फुटबाल विश्वकप कतर में आयोजित करने का निर्णय लिया था। उस समय आरोप लगे थे कि फीफा विश्वकप को अपने यहां आयोजित करने के लिए कतर ने फीफा के अधिकारियों को घूस दिया था। इस आरोप के कारण यह खेल और खेल-भावना संदिग्ध बन गई और यह अब तक बनी हुई है...

अफ्रीकी देशों का मानना था कि इस विश्वकप में नस्लीय आधार पर भेदभाव के कारण अफ्रीकी देशों को समुचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया जा रहा है। बहिष्कार के दबाव के कारण फीफा को अफ्रीकी देशों की मांग को मानना पड़ा था। इसलिए ऐसा माना जा सकता है कि खेल आयोजनों का राजनीतिक, राष्ट्रीय और वैचारिक हितों के लिए उपयोग पहले भी होता रहा है। फिर भी, कतर के फीफा विश्वकप में हो रहा टकराव कई मायनों में अलग है। यहां विभिन्न देशों के बीच टकराव सभ्यतागत स्तर पर दिख रहा है और टकराव का मैदान मीडिया और संचारीय दुनिया बनी हुई है। दुनिया की दो महत्वपूर्ण पांथिक समुदाय इस खेल आयोजन का उपयोग अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता को साबित करने के लिए खुलकर कर रहे हैं। इसी कारण यह विश्वकप खेल से अधिक मूल्यों और मान्यताओं के कारण चर्चा में हैं।

इस संचारीय संघर्ष की शुरुआत 2010 में ही हो गई थी, जब फीफा ने 2022 का फुटबाल विश्वकप कतर में आयोजित करने का निर्णय लिया था। उस समय आरोप लगे थे कि फीफा विश्वकप को अपने यहां आयोजित करने के लिए कतर ने फीफा के अधिकारियों को घूस दिया था। इस आरोप के कारण यह खेल और खेल-भावना संदिग्ध बन गई और यह अब तक बनी हुई है। संचारीय मोर्चे पर पश्चिमी दुनिया और कतर के टकराव बढ़ गया जब फरवरी 2021 में द गार्डियन में एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई और यह दावा किया गया कि पिछले एक दशक में विश्वकप की तैयारियों और अधोसंरचना के निर्माण में अब तक नेपाल, पाकिस्तान, भारत और श्रीलंका के 6500 श्रमिकों की मौत हो गई है। कतर की सरकार ने आंकड़ों का कुल योग को गुमराह बताने वाला बताकर इस रिपोर्ट से अपना पल्ला झाड़ लिया।

इसके बाद शराब, सुअर के मांस पर प्रतिबंध के मुद्दों को लेकर फीफा विश्वकप निशाने पर आ गया। स्पष्टत: इनका संबंध फुटबाल से अधिक सभ्यतागत विषयों से अधिक था। कपड़ों के संदर्भ में स्थानीय परंपराओं का ध्यान रखने का आग्रह किया गया। धार्मिक पुस्तकों और अन्य धार्मिक सामग्री का भी कतर में ले जाना निषेध था। कतर द्वारा इन सभी प्रतिबंधों को खेल आयोजन पर थोपने से दुनिया

और खेल-प्रेमियों में अच्छा संकेत नहीं गया। माशा अमीनी के मुद्दे पर ईरान की टीम ने जिस तरह से अपना विरोध दर्ज कराया, और एक मैच के दौरान राष्ट्रगान के दौरान मौन रहे, उसने ईरान की सत्ता को कठघरे में खड़ा ही किया, अन्य मुस्लिम देशों में भी महिलाओं की स्थिति पर पश्चिमी मीडिया को मौका दे दिया। इसी तरह जर्मन टीम ने भी जापान के खिलाफ अपने मुंह बंद करके विश्वकप में फीफा और कतर के प्रति अपनी असहमति प्रकट की।

संचारीय-आग्रहों की चरम परिणति तब दखने को मिली जब बीबीसी वन ने फीफा विश्वकप के उद्घाटन समारोह का प्रसारण नहीं किया। बीबीसी की तरफ से उद्घाटन समारोह के दौरान मानवाधिकार के मुद्दे पर कतर को घेरने की कोशिश की गई। इस दौरान इंग्लैंड की फुटबाल टीम के पूर्व कप्तान और बीबीसी की तरफ से उद्घाटन समारोह के प्रस्तोता गैरी लिनेकर ने इसे इतिहास का सबसे विवादास्पद विश्वकप बताया।

प्रश्न यह भी है कि पश्चिमी अथवा अन्य देशों से पांथिक स्वतंत्रता की अपेक्षा करने वाले मुस्लिम देश अपने देश में पांथिक स्वतंत्रता क्यों नहीं देना चाहते और खेल आयोजनों को मतांतरण के मौके के रूप में करने का उनकी मंशा क्या खेल भावना के पूरी तरह विपरीत नहीं हैं...

खेल आयोजन में दावाह अभियान

एक तरफ पश्चिमी देश अपने मूल्यों और मान्यताओं के आधार पर फीफा विश्वकप 2022 के आयोजन के लिए कतर पर दबाव बना रहे हैं, तो दूसरी तरफ कतर एक खेल आयोजन को मजहबी अभियान से जोड़कर नए विवादों का जन्म दे दिया है। इस तरफ पूरी दुनिया का ध्यान तब गया, जब विवादास्पद मजहबी प्रचारक जाकिर नायक को फीफा विश्वकप कप दौरान कतर में देखा गया। ऐसी खबरें आईं कि वह फुटबाल विश्वकप के दौरान युवाओं को लुभाने के लिए तकरीरें करेंगे। प्रश्न यह उठा कि एक खेल आयोजन के दौरान कतर को विवादास्पद मजहबी प्रचारक को बुलाने की जरूरत क्यों पड़ी!

गहराई से अध्ययन करने पर पता चलता है कि जाकिर नायक को आमंत्रण विश्वकप के दौरान दर्शकों को इस्लाम की तरफ आकर्षित करने के लिए बनाई गई सुव्यवस्थित और व्यापक रणनीति का एक हिस्सा भर है। जैसे कतर में ऐसे बहुत सारे बिलिबोर्ड्स लगाए हैं, जिसमें हदीस के उद्धरणों में अग्रेजी भाषा में लगाया गया है।

23 नवंबर को कतर की प्रयासों को स्पष्ट करते हुए इंटरनेशनल यूनियन ऑफ मुस्लिम स्कालर्स ने स्पष्ट रूप से लिखा कि विश्वकप के आयोजन का उपयोग इस्लामिक संस्कृति को परोसने के अवसर के रूप में लिया जाना चाहिए। इंटरनेशनल यूनियन ऑफ मुस्लिम स्कॉलर्स को कतर समर्थित संगठन माना जाता है।

कतर द्वारा विश्वकप का उपयोग इस्लामी संस्कृति के प्रचार-प्रसार करने की रणनीति इसलिए लोगों के सामने खुलकर आ गई क्योंकि कई मुस्लिम विद्वानों ने इसकी स्वीकृति और प्रशंसा की। मसलन कतर के प्रयासों की प्रशंसा करते 19 नवंबर, 2022 को कुवैती उपदेशक डॉ. मुहम्मद धवी अल ओसिमी ने ट्वीट किया कि विश्वकप के दौरान लोगों को इस्लाम के तरफ आमंत्रित करना सर्वश्रेष्ठ कार्यों में से एक है। यहां यह ध्यान रखने वाली बात है कि विश्वकप में भाग लेने वाली 32 टीमों में से केवल 5 टीमें ही मुस्लिम बहुल देशों से आई हैं।

प्रश्न यह भी है कि पश्चिमी अथवा अन्य देशों से पांथिक स्वतंत्रता की अपेक्षा करने वाले मुस्लिम देश अपने देश में पांथिक स्वतंत्रता क्यों नहीं देना चाहते और खेल आयोजनों को मतांतरण के मौके के रूप में करने का उनकी मंशा क्या खेल भावना के पूरी तरह विपरीत नहीं हैं।

इस तरह कतर में हो रहा फीफा विश्वकप खेल से अधिक सभ्यतागत आग्रहों-दुराग्रहों की अभिव्यक्ति का आयोजन बन गया है। बीबीसी प्रस्तोता गैरी लिनेकर की यह बात सही है कि यह अब तक का सबसे अधिक विवादास्पद विश्वकप है, लेकिन इसका कारण मानवाधिकार नहीं बल्कि सभ्यतागत-संघर्ष है, जो कि संचारीय मोर्चे पर लड़ा जा रहा है।

❐ त्रिवेणी प्रसाद तिवारी

रंग : एक भाव तकनीक

रूप जगत की सृष्टि में रंग एक महान आश्चर्य है। दृश्यमान जगत में रूप का सत्य रंग ही है। यदि संसार में रंग नहीं होते तो केवल रेखाएं होती, रूप नहीं होता। सारा दृश्य जगत एक-दूसरे में मिश्रित रहता। विभेद करना कठिन हो जाता। आप सोच रहे होंगे रंग न होते तो कम से कम स्याह-सफेद तो होता ही, परंतु स्याह-सफेद भी तो एक रंग ही है। रंग, रूप की इच्छा को ध्वनित करता है... राग पैदा करता है... पहचान स्थिर करता है। ये रंग आखिर आते कहां से हैं? साधारण पढ़ा-लिखा कोई आपको टका सा उत्तर दे देगा 'प्रकाश से'। वर्ण, प्रकाश के प्रकीर्णन से हमें दिखाई पड़ता है। कितना आश्चर्य है प्रतीति की व्यवस्था का? रंग है प्रकाश में और प्रतीत हमारी आंखों से होता है। रंगों की प्रकाशीय अनुभूति मानव मन में राग पैदा करती है। आस्वादन को प्रेरित करती है। पुन:-पुन: आस्वादन रचने का भाव पैदा करती है। वही कला-मन कलाकार हो जाता है।

कला में कोई रूप की साधना करता है, कोई रेखा की। कोई सतह के बुनावट की परंतु रंगों की साधना में कोई-कोई ही प्रवृत्त हो पाता है। वर्ण अमूर्त होते हैं। यह स्वरूपों का आयाम है। अत: रंगों की साधना करने वाला कलाकार प्राय: अमूर्त साधक होता है। रंगानुभूति चित्त को आंतरिक यात्रा की ओर ले जाती है। ये किसी रेखा की सीमा में बंधते नहीं, बल्कि जब विशिष्ट पहचान राशि को व्यक्त करना होता है तब रंगों को रोकना पड़ता है, उसके बहाव को नियंत्रित करना पड़ता है। चित्र निर्माण में जितना महत्व रेखा अभ्यास का है, उससे कहीं ज्यादा महत्व रंगों का है। वर्ण की प्रकृति, उसका प्रभाव और प्रयोग अत्यंत अभ्याससाध्य आकर्षक चीजें हैं, जिसके बिना कलाकार की साधना अधूरी है। रंगों के आकर्षण-विकर्षण का बीज प्रत्येक प्राणी के अंदर पहले से ही होता है। प्रथम रूपाभास वर्णो द्वारा ही होता है। कलाभ्यासी अपने गुरु के पास इन्हीं बारीकियों को सीखता है। चूंकि कला अनुकृति से प्रारंभ होती है, इसलिए प्रथम गुरु प्रकृति होती है। अत: आप पायेंगे कि कलामन प्राय: स्वच्छन्द होता है। नित नवीन मूर्त-अमूर्त प्रयोगों में लगा रहता है। किसी रुचिकर पहलू को लेकर रुपनिर्माण का प्रयास करता है।

भारतीय कला सिद्धांत षडंग में वर्णिका भंग के अंतर्गत रंगों का प्रयोग वर्णित है। इसमें दो शब्द हैं वर्णिका और भंग। वर्णिका अर्थात् रंगों प्रयोग, अनुलेपन। भंग अर्थात् रंगों की भंगिमा, रीति, रंग प्रयोग का तरीका। ये सिद्धांत प्राचीन नहीं हैं, बल्कि आज भी समकालिक हैं। किसी चित्र में, चित्रशैली में विशिष्ट रंगों का प्रयोग और रंगों की विभिन्न भंगिमाएं या उसके अलग-अलग शेड विशेषता का भान कराता है, उसे हम शैलियों में पहचानते हैं। रंगों का रुचिकर प्रयोग प्राक् मानव, वनवासी लोगों से लेकर आज तक का प्रत्येक सुसंस्कृत समाज करता आ रहा है। प्राचीन गुफा चित्रों-भीमबेटका, लिखनिया दरी में सीधे गेरु से ही चित्रण किया गया है। इन गुफा चित्रों में तत्कालीन जीवन उपक्रम रंगों से ही रेखांकित कर अद्भुत चित्र संसार उकेरा गया है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्रम् में मुख्य दो बातों पर बल दिया गया है, रेखांकन दूसरा वर्णज्ञान। जितनी तन्मयता और अभ्यास रेखांकन में होनी चाहिए उससे कहीं ज्यादा वर्णों का ज्ञान होना चाहिए। अजंता, वाघ, जोगीमारा आदि गुफाओं में पत्थरों पर विशेष वज्रलेप लगाकर, उन पर बनाये चित्रों में भरे रंग आज भी आश्चर्य से कम नहीं हैं।

रंग लगाना धीरबुद्धि का काम है। उसको स्वयं निर्मित करना वर्णिकाभंग: की ही शाखा है। आज के यांत्रिक-औद्योगिक संसार में कलाकार-कलाभ्यासी रंगों की डिब्बी खरीद कर लाता है। कैनवस या दीवारों पर उसे पोत कर किन्हीं विशेष रंगों की शैली रचने का प्रयास करता है। परन्तु वर्णरंजकों को घोटते हुए, बनाते हुए जो मन पिसता है और जिज्ञासा से कुछ नयी उद्भावनाएं जगती हैं, वह अनुभूति ही गायब है। अब सब कुछ तैयार माल है। उसे केवल संयोजित करना है। इसीलिए आजकल कलाकारों के मध्य आप यह कहते हुए पायेंगे कि मैंने कुछ नया 'कंपोजिशन (संयोजन)' बनाया है। वह सतह की बुनावट को उतनी आत्मीयता से नहीं पढ़ता, जितना कि सतह के संयोजन से चमत्कार पैदा करता है।

कला प्रकृति से स्व की अंतर्यात्रा है। यह एक आत्मखोज है। चित्र-मूर्ति तो रुपक वृत्ति बन जाते हैं। इस वृत्ति के मूल में रंगानुभूति होती है, जिसे वह विभिन्न उपकरणों से, अनुप्रयोगों से आंखों की इच्छाओं को गढ़ने का प्रयास करता रहता है। रंगों के प्रति हमारी इंद्रियां अधिक संवेदनशील होती हैं, इसलिए इनसे भावों की क्रिया मुखर हो जाती है। किसी चित्र को देखकर सामान्यत: आप उसकी लावण्यता, भाव और मधुर वर्णयोजना पर अपना मन हार आते हैं।

यदि ध्यान से देखें तो पायेंगे कि रंगों के लगाने के विशिष्ट तरीके के कारण आपकी नजरें बार-बार आकर्षित होती हैं। किसी रूप के सतह की बुनावट रेखाओं से नहीं, बल्कि रंगों के परिचालन से होती है अर्थात् रंग लगाने का विशिष्ट तरीका जो ब्रश, उंगली, धागा, स्पैचुला, स्प्रे, या रेशे हो सकते हैं।

रंग लगाना सर्वाधिक आनंददायक एकाग्र तकनीक है। रंग लगाने में निर्दोष भाव होना आवश्यक है, नहीं तो आप रंग छूते ही डरेंगे। बच्चे सीधे रंगों से चित्र निर्माण करते हैं। उनमें जरा भी झिझक नहीं होती। वे काला रंग भी बड़ी आसानी से लगाते हैं, जबकि मंझा हुआ कलाकार भी इस रंग के उचित प्रयोग को लेकर बहुत सोचता है। बड़े लोगों में रंग प्रयोग को लेकर एक झिझक होती है। कला बाह्य से अंतर का रास्ता बनाती है। आह्लाद का भाव जिसमें अधिक होता है, वे जल्दी से रंग चुनते हैं। षडंग सिद्धांत में वर्णिका भंग चित्र निर्माण विधान का ऐसा सोपान है जिसमें भाव और तकनीक का मिश्रण है। कला में अपनी अभिव्यक्ति के लिए तकनीकी का विकास स्वयं करना पड़ता है। समकालीन समय में हर एक, चाहे वह संस्था हो या व्यक्ति, सभी अपनी अभिव्यक्ति किसी तकनीकी माध्यम से रखता है। अधिकतर तो ये दूसरों द्वारा निर्मित उपकरण ही होते हैं। भाव संवाद प्रकट करने की सुविधापूर्ण उपकरणों में यह संसार आनंद महसूस करता है, जबकि वे मात्र मनोरंजन बनकर रह जाती हैं। उदाहरणस्वरूप आज जीवनोपयोगी सभी इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं और परिवहन गति के माध्यम, सौंदर्य भाव को तुष्ट नहीं करते, आनंद भाव का सृजन नहीं करते, बल्कि स्थिति परिवर्तन करते हैं बस...।

आज पूरी दुनिया की अभिव्यक्ति एक ही प्रयोजित तकनीक के बहुसंख्या में उत्पादित उपकरणों में सीमित है। अभिव्यक्ति का संचार परमानंद की ओर न होकर तकनीकी मनोरंजन की कुंडलियों में फंसा हुआ है, जबकि कला में आनंददायक रंग और उसके प्रयोग-बुनावट की तकनीक मानव मन में आह्लाद पैदा करती है, मनोरंजन (एंटरटेनमेंट) नहीं। कला की ये भावतकनीक मन को विकाररहित, स्वच्छ करता है और उपलब्धि की क्षुद्र प्रतियोगिता से मुक्त करता है। ये वर्ण भाव कलाभिव्यक्ति धीरे-धीरे स्वानंद की ओर ले जाते हैं, जिसका गंतव्य भारतीय कलादर्शन अनुसार 'लीयतेपरमानंदम्' में विलीन होना है।

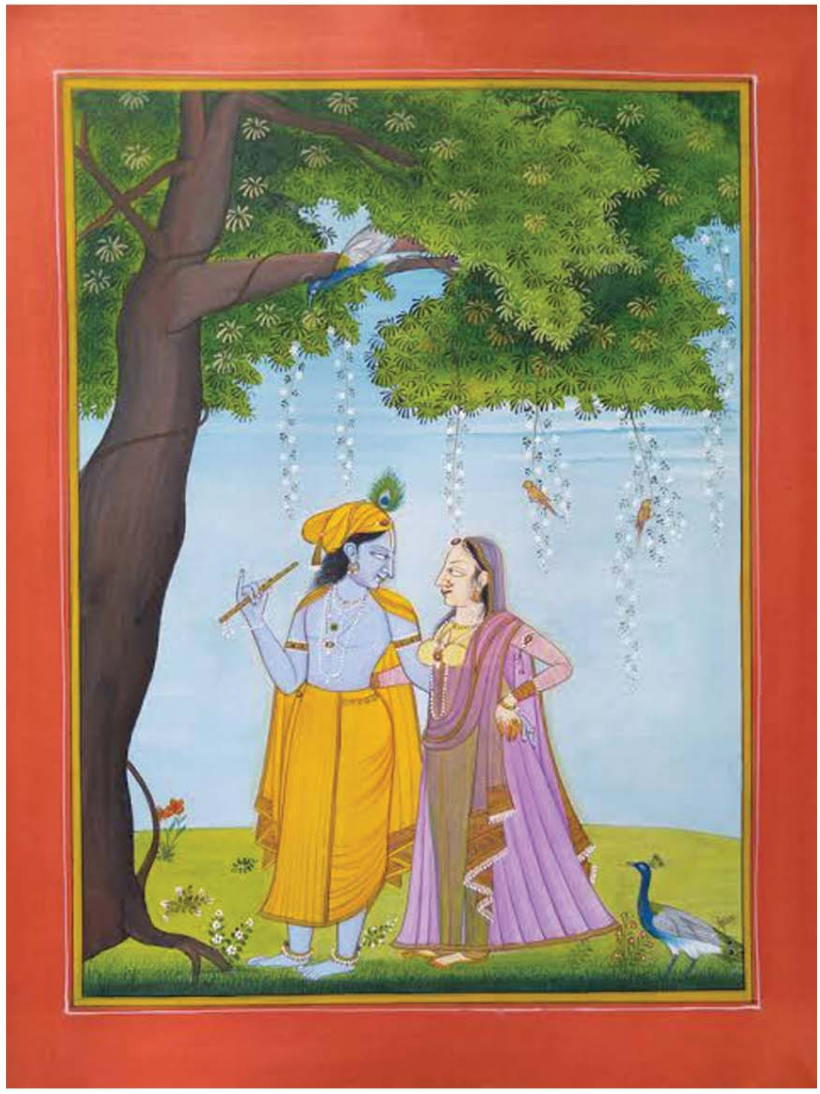

वर्णिका भंग मूलत: रंगसंगति, वर्ण-विन्यास और रंग तकनीक का ही सूत्रनाम है। चित्र निर्माण में सबसे पहले चित्रभूमि तैयार की जाती है यथा-दीवार, कपड़ा, कैनवास, लकड़ी, पत्थर आदि अलग-अलग सतह गुण वाले माध्यम होते हैं। विभिन्न सतहों पर रंगों के सुंदर और अक्षय प्रभाव हेतु विभिन्न प्रकार से चित्रभूमि का निर्माण किया जाता है। प्रागैतिहास से लेकर आज तक, अजंता, वाघ से लेकर यूरोप के सिस्टाइन चैपल तक भित्ति पर बनाई गई पेंटिंग को सुंदरता के साथ निर्माण की अद्भुत् तकनीकों के लिए भी जाना जाता है। भारत में प्राचीन शिल्पग्रंथों में चित्रनिर्माण की कई विधियां उल्लिखित हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण, शिल्परत्न, समरांगणसूत्रधार अन्य कई ग्रंथों में भूमिबंध की कई विधियों का वर्णन है। अजंता के पलस्तर खंडों के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय सतह निर्माण में मिट्टी, गोबर, बालू चूने का प्रयोग हुआ है। चित्रसूत्र में भित्ति तैयार करने के लिए विभिन्न लेपों का वर्णन है तथा भित्ति को चिकना करने के लिए लिपाई की ऐसी विधि भी बतलाई गयी है जो सौ वर्षों तक नष्ट नहीं होती-

त्रिप्रकारेष्टिकाचूर्णं
त्र्यंशंक्षिप्त्वा मृदस्ततः
गुग्गुलं समधूच्छिष्टं मधुकं
मुरुकं गुड़म् ।।

अर्थात् इसमें तीन प्रकार की ईंटों के चूर्ण में एक तिहाई मिट्टी डालकर गुग्गुल, मोम, महुवा मूर्वा, गुड़ और कुसुम का फूल तथा इन सबके बराबर तेल मिलायें फिर उसमें आग पर पकाया हुआ एक तिहाई चूना, दो अंश बेल का गूदा, मषक(मसी) कषी(खैर) और तद्नुरूप बालू का अंश मिलाकर चिकनी ढाल के पानी में अथवा चमड़े के पात्र में रखे पानी में उस मिश्रित पदार्थ को एक मास तक भिगायें। एक महीने में वह मिश्रित पदार्थ कोमल हो जाता है, तब उसको सावधानीपूर्वक निकालकर सूखी दीवार पर लेप करें। लेप चिकना हो, सम हो, दृढ़ हो, ऊबड़-खाबड़ नहीं होना चाहिए। वह बहुत मोटा या पतला नहीं होना चाहिए। उससे बार-बार लिपी हुई दीवार जब सूख तब तेल, मिट्टी और चूने के मिश्रण से तैयार किये हुए लेपों एवं चिकने मंजनों से दीवार पर सावधानी से वारनिश करें। अनंतर बार-बार दूध से सींचकर तुरंत यत्नपूर्वक दीवार सुखा लें। दीवार सूख जाने पर शुभ तिथि व नक्षत्र में श्वेत वस्त्र धारण करके ब्राह्मणों एवं गुरुजनों को प्रणाम करके, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अपने इष्टदेव का ध्यान करके चित्र बनाना आरम्भ करना चाहिए।

पाश्चात्य कला सिद्धांत में मुख्यतया तीन रंग-लाल, नीला, पीला होते हैं। इनके मिश्रण से द्वितीयक रंग बनते हैं। वर्तमान समय में रंग रासायनिक विधि से तैयार किये जाते हैं। आजकल रंग कई माध्यम हैं-जल रंग, पोस्टर रंग, आयल-पेस्टल, तैल रंग, एक्रिलिक और चारकोल। भारत में यूरोपीय प्रभाव आने से पहले कला में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता रहा, अजंता, पहाड़ी, राजस्थानी, मुगल से पटना कलम तक। रंगों को तैयार करना एक विशिष्ट ज्ञान था, जिसमें कलाकार निष्णात होता था। वनस्पतियों और विभिन्न वस्तुओं से रंग उतारना, छानना, घोंटना और भित्ति पर रेखांकन और रंग भरना, प्रतिभावान कलाकार ही कर सकता था। चित्रसूत्र में पांच प्रधान रंग बताये गये हैं-श्वेत, पीत, कृष्ण, नील, लाल।

मूलरंगा: स्मृता: पंचश्वेत: पीतविलोभत:।
कृष्णा नीलश्च राजेन्द्र शतशोन्तरत: स्मता:।।

– चित्रसूत्र 40/16

चित्रसूत्र में रंग भरने की विधि बतलायी गयी है। चित्र की बाहरी रेखाएं 'सूत्रपात रेखा' कहलाती हैं। सुभवार्ति-रेखा फाइनल तैयार चित्र है जिसमें रंग भरा जाता है, इसके बाद मंडल कार्य, तत्पश्चात् मनोरमा अर्थात् रंगों से सौंदर्य उभारना। चित्र की रेखाओं को गोलाकार और सुंदर होना चाहिए। रंग के प्रथम कोट को 'वर्तना' कहते हैं। वर्तना के अंतर्गत विरल विलेपन(पतला रंग)करते हैं।

वैष्णव रीति में राधा-कृष्ण प्रेम के प्रतीक हैं। इनके चित्रों में नीली आभा युक्त पीतांबर के साथ कृष्ण होने चाहिए और राधा सुनहरे रंग में चित्रित होने चाहिए। 'रस चित्रों' में रंगों के प्रयोग को 'वर्णालेख्य' विधि अर्थात् रंगों द्वारा यथार्थ भाव चित्रण किया जाता है। विभिन्न प्रकार के रसों के चित्रण में रस के मानक वर्ण स्थापित किये गये हैं यथा-शृंगार रस का श्याम(हल्का नीला आसमानी), हास्य का श्वेत, करुण का भूरा रंग, रौद्र का लाल, वीर रस हेतु पीताभ श्वेत, भयानक रस के लिए काला रंग और वीभत्स के लिए नीला रंग। हमारे शास्त्रों में वर्णित विभिन्न देवी-देवताओं के रंगों का प्रतीकात्मक महत्व है। उनके उच्च दैवीय गुणों, आभा को दर्शाने के लिए आसमानी नीला रंग का प्रयोग किया जाता है। शिव अप्रतिम योगी हैं। वे बिना किसी आभूषण या शृंगार के रहते हैं। उनका चित्र 'गौरांग' शेड वाला होना चाहिए। हनुमान और गणेश 'लाल' रंग में हैं। यहां लाला रंग अतुलित बल, तेज का प्रतीक है। मां काली का काला रंग, सभी रंगों एवं ब्रह्मांड की समस्त ऊर्जाओं को स्वयं में समाहित किये रहता है। समस्त अस्तित्व और शक्ति का केंद्र होने के कारण वे काला रंग धारण करती हैं। काला रंग सभी रंगों को अपने में समा लेता है, लेकिन आभा कृष्ण रंग का ही रहता है। 'रागमाला' के चित्रों में रागों की प्रकृति, प्रभाव और प्रहर के आधार पर रंगों का रसानुकूल प्रयोग किया गया है। ये चित्र, संगीत, कविता और रंगों की अद्भुत् समन्वय है। पहाड़ी चित्रों एवं राजस्थानी शैलियों के चित्रों की मोहक लयकारी युक्त रंग योजना, अद्भुत् भावाभिव्यंजना भारतीय कला की अनमोल धरोहर है।

द कश्मीर फाइल्स : झूठ को बेचैन करती कहानी

❑ सव्यसाची

एक माध्यम के रूप में फिल्में विद्वतजन से लेकर आमजन तक सबको प्रभावित करती हैं और सबके सोचने.विचारने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। भारत में फिल्मों के माध्यम से एजेंडा सेट करने की कोशिश लंबे समय से होती रही है, लेकिन पिछले कुछ समय से खुरदुरा यथार्थ भी फिल्मी परदे पर उतर रहा है। इसके कारण कई लोगों में बेचैनी पैदा हो गई है। कुछ उदाहरणों को सामने रखें तो फिल्मों के माध्यम से किए जा रहे एजेंडा-सेटिंग को आसानी से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि सलीम-जावेद की दीवार की बात करें तो उसमें नायक 'अमिताभ बच्चन' भगवान शिव को मानने से मना करता है, लेकिन 786 पर पूर्ण आस्था रखता है। आश्चर्य इस बात का है कि उसी फिल्म में बिल्ला नंबर 786 नायक की हमेशा रक्षा करता है और हर संकट से बाहर निकालता है। सलीम-जावेद ने बड़ी सरलता से आम समाज में 786 की मान्यता को इस फिल्म के माध्यम से गढ़ दिया। भगवान शिव पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है, 786 आपकी सारी समस्याओं का हल कर देगा। उसके बाद से 786 अंकित नोट, गाड़ी के नंबर, फोन नंबर आदि की मांग समाज के एक वर्ग में तेजी से बढ़ी।

सलीम-जावेद ने बड़ी सरलता से आम समाज में 786 की मान्यता को इस फिल्म के माध्यम से गढ़ दिया। भगवान शिव पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है, 786 आपकी सारी समस्याओं का हल कर देगा...

ऐसी फिल्मों की एक लंबी श्रृंखला है। लेकिन कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जो पूर्णत: ऐतिहासिक घटनाक्रम पर आधारित होती हैं। जिन्हें निर्माता गहन शोध के बाद विशेषज्ञों की सहायता से निर्मित करते हैं। हॉलीवुड ऐसी फिल्मों से भरा पड़ा है और वैश्विक मंचों पर ऐसी फिल्मों की सराहना होती है। इसका कारण यह है कि जो गलतियां इतिहास में हुई हैं, वे दोबारा दोहराई न जाएं। इसलिए जनता को उनसे अवगत करवाना चाहिए। भारतीय इतिहास में अनेकों ऐसी घटनाएं घटी हैं, जो हमारी सभ्यता और समसामायिक मान्यताओं से बिल्कुल विपरीत हैं। इसके बावजूद इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि ये ऐतिहासिक घटनाएं कभी रजत पटल पर नहीं आईं। अरब, तुर्क, मुगल आक्रांताओं से लेकर यूरोपीय शासन का काला अध्याय आज तक अपनी असलीयत के साथ फिल्म निर्माताओं द्वारा नहीं लाया गया। यहां तक कि युद्ध के इतिहास भी फिल्मों के माध्यम से अंकित नहीं हो पाए। भारत में लगभग सभी बड़ी घटनाएं और युद्ध गुमनामी का दंश झेल रहे हैं।

हाल फिलहाल में भारत में फिल्म उद्योग से जुड़े कुछ लोगों ने ढर्रे से हटकर कुछ ऐतिहासिक घटनाओं पर फिल्म निर्माण के कुछ प्रयोग किए। उनमें विवेक रंजन अग्निहोत्री द्वारा निर्मित फिल्म

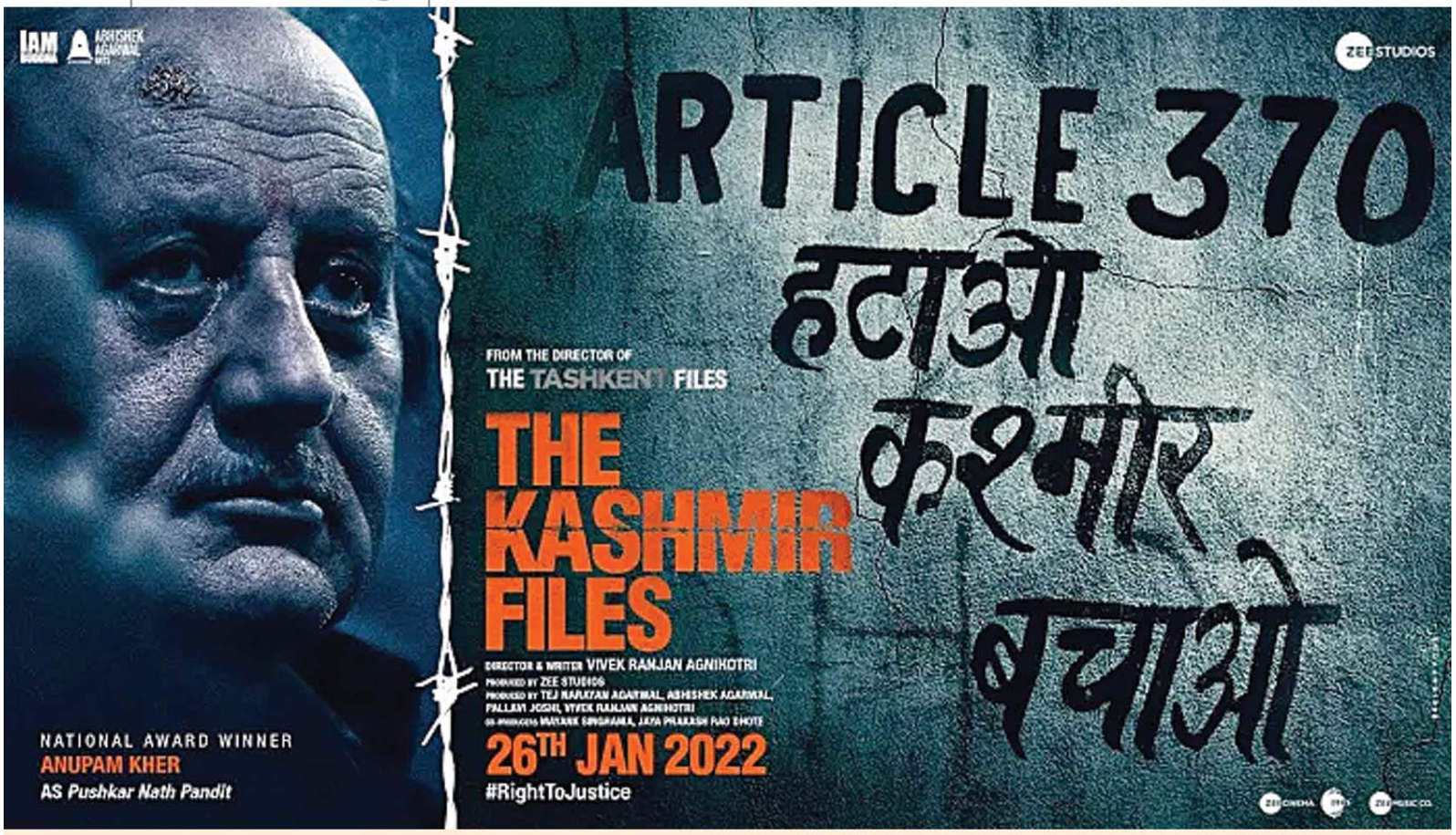

`द कश्मीर फाइल्स' में 1990 के दशक दशक में कश्मीर से हिंदूओं के अंतिम नरसंहार की कहानी को वास्तविक घटनाओं के आधार पर दर्शाया गया है। कश्मीरी हिंदुओं के नरसंहार की कहानी तो लगभग सभी जानते हैं, लेकिन यह नरसंहार हुआ कैसे इसकी छोटी सी झलक दिखाने का प्रयास `द कश्मीर फाइल्स' फिल्म में किया गया है...

'द कश्मीर फाइल्स' प्रमुख है। 'द कश्मीर फाइल्स' में 1990 के दशक दशक में कश्मीर से हिंदूओं के अंतिम नरसंहार की कहानी को वास्तविक घटनाओं के आधार पर दर्शाया गया है। कश्मीरी हिंदुओं के नरसंहार की कहानी तो लगभग सभी जानते हैं, लेकिन यह नरसंहार हुआ कैसे इसकी छोटी सी झलक दिखाने का प्रयास 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म में किया गया है।

22 नवंबर, 2022 को गोवा में आयोजित 53वें इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया में इस फिल्म को प्रदर्शित किया गया। इस फेस्टिवल के आयोजकों ने इजरायली मूल के एक फिल्मकार नदव लापिद को प्रमुख ज्यूरी के तौर पर बुलाया था। फिल्म देखने के बाद नदव ने विवेक अग्निहोत्री द्वारा निर्मित फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को 'प्रोपेगंडा' और 'वल्गर' फिल्म कह दिया। उन्होंने कहा कि वह 'द कश्मीर फाइल्स' देख कर न सिर्फ हैरान हुए बल्कि परेशान भी हो गए। नदव ने आगे यहां तक कह दिया कि यह फिल्म ऐसे महोत्स्व में दिखाने लायक नहीं थी। हालांकि नदव की इस टिप्पणी पर भारत में इजरायल के राजदूत कोबी शोसानी ने ही असहमति जता दी। कोबी ने कहा कि उनकी सोच नदव लापिद से अलग है और वो फिल्म बनाने वालों से मिल चुके हैं। कोबी ने आगे बताया कि वे नदव को भी अपनी राय बता चुके हैं।

नदव की इस टिप्पणी पर अनेकों लोगों ने असहमति जताई, जबकि कई लोगों ने उनका समर्थन भी किया। उनकी बात का समर्थन करने वालों में कांग्रेस की सोशल मीडिया चेयरपर्सन सुप्रिया श्रीनेत और कर्नाटक के कांग्रेस नेता श्रीनिवास प्रमुख हैं। सुप्रिया ने कहा कि द कश्मीर फाइल्स को इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया ने नकार दिया है। वहीं, शिवसेना उद्धव गुट की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने भी नदव के बयान से सहमति जताई। नदव स्वयं नरसंहार का दंश झेल चुके देश और समाज से आते हैं। यहूदियों के नरसंहार की कहानी तो पूरा विश्व जानता है और उस पर बनी

फिल्मों की प्रशंसा भी खूब होती है। लेकिन कश्मीरी हिंदुओं के नरसंहार के बारे में बताने वाली पहली ऐसी फिल्म ही इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया से नकारी जाती है, क्योंकि वह उनके एजेंडे पर फिट नहीं बैठती।

कश्मीर से हिंदुओं के नरसंहार की बात करें तो कश्मीर भ्रमण के पश्चात 1895 में अंग्रेजी अधिकारी वॉल्टर लॉरेंस सिकंदर 'बुतशिकन', 14वीं-15वीं शताब्दी के राज में कश्मीरी हिंदुओं को दिए गए विकल्पों को बताते हैं। इस्लामिक कट्टरपंथ की इस पहली आंधी में कश्मीर से अनेक हिंदू पलायन कर गए, कई मतांतरित हुए तथा असंख्य मारे गए। 'भट्ट-मजार' और दौर की बर्बरता को आज भी याद दिलाता है। अनगिनत अनमोल धर्मग्रंथों व पांडुलिपियों को डल झील व झेलम में फेंक दिया गया। सैकड़ों अति प्राचीन मंदिरों व मठों को उसके निर्देश पर खंडहर बना दिया गयाए जिनमें मार्तंड सूर्य मंदिर भी था।

अब लगभग 600 वर्ष आगे आते हैं। 1980 का दशक समाप्त होते-होते कश्मीर पुन: ष्रलिव, गलिव, त्सलिव, 'मृत्यु, मतांतरण या पलायन' की पुकार से गूंज उठा था। जिसे 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म में प्रमुखता से दिखाया गया है। मंदिरों पर हमले शुरू हो गए। और फिर 14 सितंबर सन् 1989 'बलिदान दिवस' को श्री टीकालाल टपलु को गोलियों से छलनी कर दिया गया। यहीं से कश्मीरी हिंदुओं के सातवें '1389-1413, 1506-1585, 1585-1753, 1753, 1931, 1986, 1989' व अंतिम नरसंहार का आरंभ हुआ। घाटी के हिंदुओं को चेतावनी के रूप में हर प्रभावशाली हिंदू को सुनियोजित ढंग से निशाना बनाया जाने लगा। जिनमें नीलकंठ गंजू, पी. ऐन. भट्ट, सर्वानंद कौल प्रेमी और लस्सा कौल कुछ प्रमुख नाम हैं। 19

पीड़ितों को मारने से पहले आतंकवादियों द्वारा अमानवीय बलात्कारए अंगों को काटनाए आंखों को निकालना, होंठों को सिलनाए तिलक पर कील ठोकने जैसी कई भीषण यातनाएं दी जाती थीं। कई शव झेलम में तैरते और पेड़ों पर लटकते पाए जाते थे। 1990 में एक स्कूल शिक्षिका सुश्री गिरिजा टिक्कू का सामूहिक बलात्कार और हत्या ऐसा ही एक उदाहरण है...

जनवरी, 1990 की रात मस्जिदों के स्पीकरों से 'ऐ काफिरो, ऐ जालिमों, कश्मीर हमारा छोड़ दो, का घोष गुंजायमान हो गया। इस प्रकार हिंदू विरोधी हत्याओं, बलात्कारों, यातनाओं व पलायन का सिलसिला सातवीं बार पुन: शुरू हुआ।

हिंदुओं को जिस तरह से प्रताड़ित किया गया और उनकी हत्या की गई वह वृत्तात रोंगटे खड़े कर देता है।

पीड़ितों को मारने से पहले आतंकवादियों द्वारा अमानवीय बलात्कार, अंगों को काटना, आंखों को निकालना, होंठों को सिलना, तिलक पर कील ठोकने जैसी कई भीषण यातनाएं दी जाती थीं। कई शव झेलम में तैरते और पेड़ों पर लटकते पाए जाते थे। 1990 में एक स्कूल शिक्षिका सुश्री गिरिजा टिक्कू का सामूहिक बलात्कार और हत्या ऐसा ही एक उदाहरण है। उनके बलात्कार के पश्चात जिहादी आतंकियों ने जीवित ही आरे से उनका एक-एक अंग काटा था।

इस काल में सैकड़ों मंदिरों का विनाश और तोड़फोड़ भी देखी गई। रातों-रात लाखों लोगों को अपने ही देश में शरणार्थी हो गये। विभाजन के बाद यह किसी भी विशेष समुदाय का सबसे बड़ा जबरन पलायन था। दुर्भाग्यवश इनकी व्यथा को फिल्म के माध्यम से बताने का साहस आज तक किसी ने नहीं किया। 2019 तक इस नरसंहार के किसी भी दोषी पर कोई पुलिस कार्रवाई नहीं की गई थी। 'द कश्मीर फाइल्स' के माध्यम से पूरे देश अपने इस वास्तविक इतिहास से रूबरू हुआ।

कहते हैं कि जब भी कोई समाज अपने निंदनीय इतिहास को पूर्णत: स्वीकार करके उन समस्याओं पर काम नहीं करताए तब तक उस इतिहास के दोहराये जाने का खतरा बना रहता है। इसलिए यह फिल्म और इस तरह की कई फिल्में सामने आना जरूरी हैं। नदव का समाज अपने लोगों के बलिदान को सदैव याद रखता है, उसकी हर जगह चर्चा करता है। स्मृति कोई प्रतिक्रियात्मक वैमनस्य पोषित करने हेतु नहीं, अपितु इतिहास से सीखने के लिए जरूरी है। इसी को याद दिलाने का एक प्रयास रहा 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म में किया गया है।

लेकिन नदव जैसी एक बड़ी जमात इससे विचलित है। उन्हें पता है कि भारत और हिंदुओं से जुड़े इतिहास की कई ऐसी परतें अभी खुलना बाकी हैं, जिनसे हिंदुस्तान अनभिज्ञ है। यह अनभिज्ञता ही वामपंथी-जिहादी-औपनिवेशिक जमात के लिए वरदान है।

कश्मीर फाइल्स की तर्ज पर और ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं रजत पटल पर न आएं इसका सबसे अच्छा उपाय है इनको प्रोपेगेंडा बताकर सिरे से नकारना। अपने पूर्वाग्रहों के चलते सच से भयभीत झूठे एजेंडों का यह मीडिया और इससे जुड़े लोग जब तक असहज सत्यों को देखने के लिए तैयार नहीं होंगेए तब तक यहूदियों का नरसंहार सत्य और हिंदुओं का नरसंहार 'प्रोपेगंडा' और 'वल्गर' ही लगेगा।

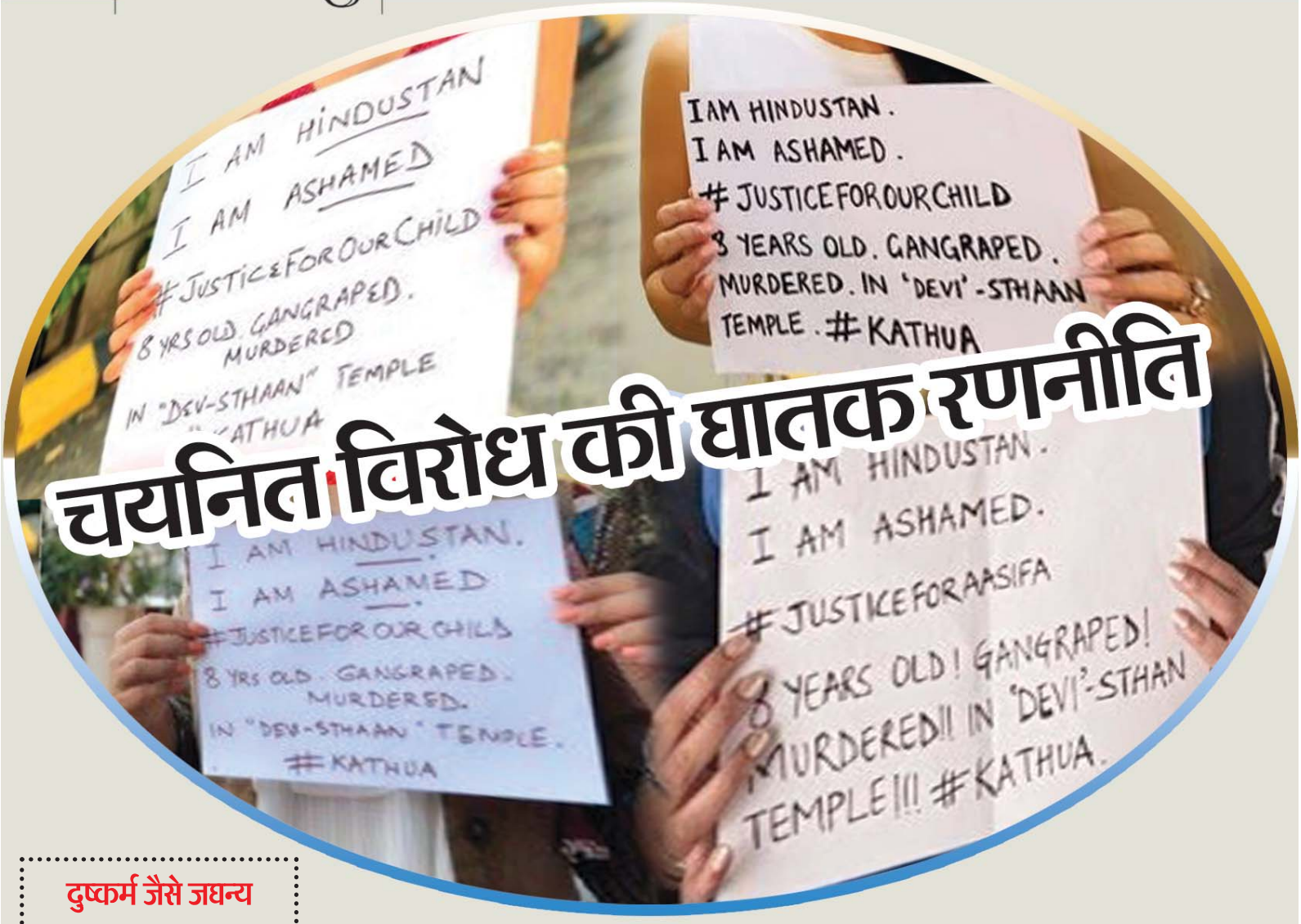

चयनित विरोध की घातक रणनीति

दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराधों के विरोध को लेकर जब भी ये चयनित विरोध करने वाले कलाकार मजहब, जाति या अन्य आधारों पर विरोध की सीमाएं और प्रतिबद्धताएं तय करते हैं, तो कहीं न कहीं बार-बार अपनी विश्वसनीयता को भी ये कठघरे में खड़ा कर रहे होते हैं...

❑ **डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल**

चयनित विरोध की रणनीति के चलते बालीवुड का चयनित विरोध करने वाले लोगों के दोगलेपन का बार-बार पर्दाफाश हो रहा है। दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराधों के विरोध को लेकर जब भी ये चयनित विरोध करने वाले कलाकार मजहब, जाति या अन्य आधारों पर विरोध की सीमाएं और प्रतिबद्धताएं तय करते हैं, तो कहीं न कहीं बार-बार अपनी विश्वसनीयता को भी ये कठघरे में खड़ा कर रहे होते हैं। यहां तक कि दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराधों में भी ये चयनित विरोध करने वाले अपनी विचारधारा और एजेंडा में फिट बैठने वाले मामलों में तो ये मुखर होकर विरोध जताते हैं। तख्तियां लेकर सड़कों पर उतर आते हैं। सोशल मीडिया पर भी सुनियोजित ढंग से एक विशेष हैशटैग के साथ न्याय के पक्ष में जबरदस्त मुहिम छेड़ते हैं। मगर जब इनकी दूषित, वैचारिक प्रतिबद्धताएं अनुमति नहीं देतीं, तो सड़क-गलियों की तो बात दूर रही, किसी रेप पीड़िता के साथ न्याय के लिए सोशल मीडिया पर भी दो शब्द नहीं लिखे जाते। एकाएक संवेदनाओं का सूखा पड़ जाता है। बालीवुड जगत की लिबरल हस्तियों के ढोंग का यह विषय भी तब उभरकर सामने आता है, जब आसिफा के न्याय के लिए तख्तियों-हैशटैग के साथ विरोध करने वाले हस्तियां हाल ही में लव जिहाद का शिकार हुई श्रद्धा के न्याय के लिए दो शब्द नहीं बोल सकीं।

दरअसल, वैचारिक प्रतिबद्धताओं को लेकर बालीवुड में हमेशा से खेमेबंदी होती आई है। एक वर्ग ऐसा है जो भारत और भारतीयता के

बॉलीवुड का चयनित विरोध करने वालों ने 2018 में जम्मू-कश्मीर के कठुआ में आठ साल की आसिफा के रेप और हत्या के महीनों बाद भी अपने कड़े विरोध से देशभर में माहौल को गर्माए रखवा था। सोशल मीडिया पर न्याय के लिए एक लंबी मुहिम चली...

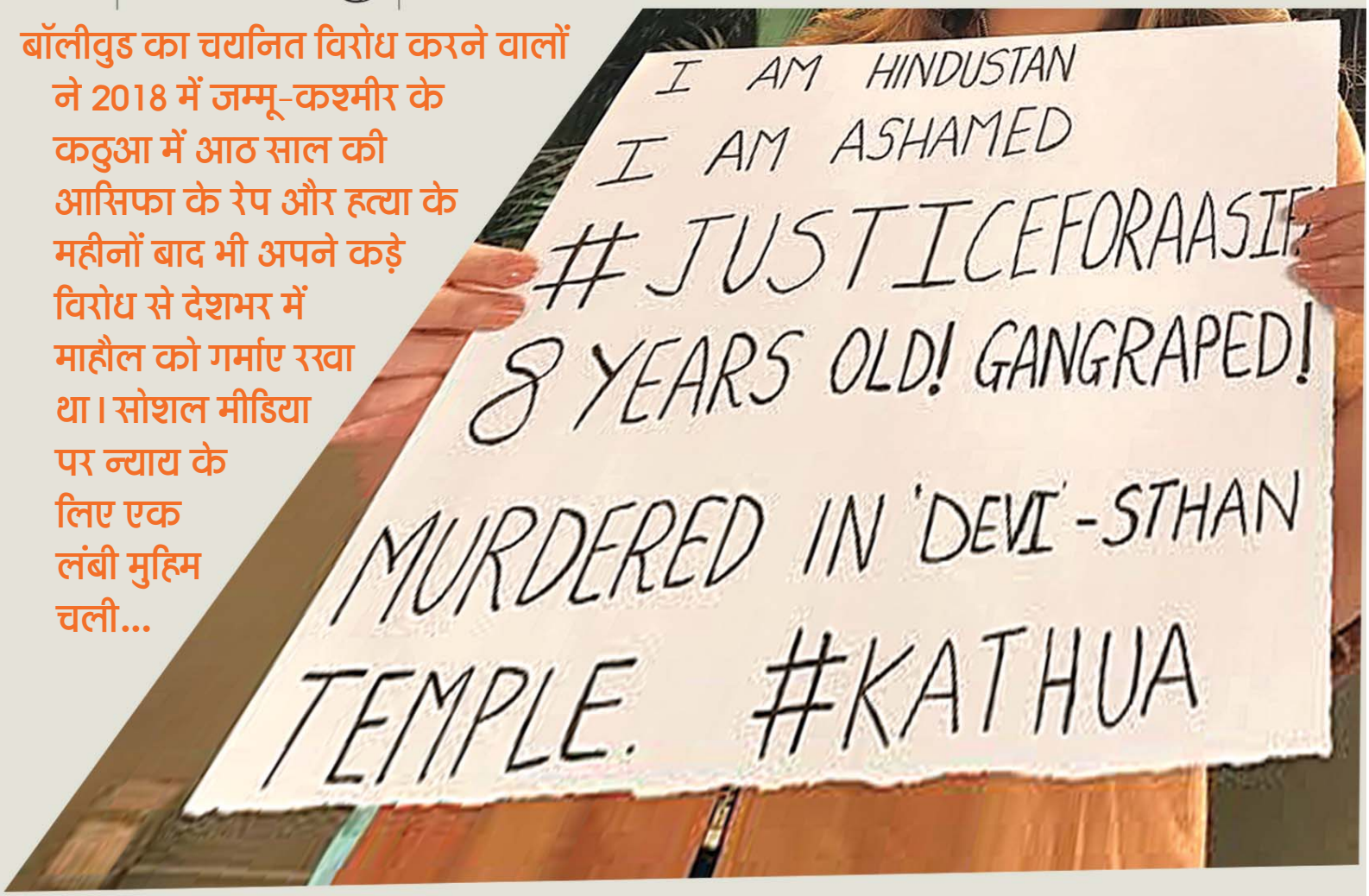

पक्ष में खड़ा होता रहा है। दूसरा पक्ष समय-समय पर ऐसे विमर्शों को गढ़ता या आगे बढ़ाता रहा है, जो भारत और इसकी परंपराओं, मूल्यों को नकारात्मक रूप में चित्रित करता आया है। फिल्मांकन से इतर सामाजिक विषयों पर इनके रुझान बार-बार प्रतिबिंबित होते रहे हैं। यहां तक कि दुष्कर्म जैसे कुकृत्यों के विरोध को लेकर भी इनके वैचारिक प्रतिबद्धताएं साफ जाहिर होने लगी हैं। बालीवुड की कथित चयनित विरोध करने वाली हस्तियां अब अपने विरोध के लिए भी चयनित दृष्टिकोण अपना रही हैं।

बॉलीवुड का चयनित विरोध करने वालों ने 2018 में जम्मू-कश्मीर के कठुआ में आठ साल की आसिफा के रेप और हत्या के महीनों बाद भी अपने कड़े विरोध से देशभर में माहौल को गर्माए रखा था। सोशल मीडिया पर न्याय के लिए एक लंबी मुहिम चली।

इस विरोध-प्रदर्शन में अक्षय कुमार की पत्नी और एक्ट्रेस ट्विंकल खन्ना अपने बेटे आरव को लेकर पहुंचीं।

आमिर खान की पत्नी किरण राव, सलमान खान की मां हेलेन, राजकुमार राव, पत्रलेखा, अदिति राव हैदरी, सोना महोपात्रा, विशाल डडलानी समेत कई सेलेब्स ने साथ मिलकर विरोध करते दिखे। तब कठुआ रेप केस पर अपने गुस्से का इजहार करते हुए स्वरा भास्कर से लेकर हुमा कुरैशी तक अभिनेत्रियों ने प्लेकार्ड के साथ अपनी तस्वीरें पोस्ट कीं। इन प्लेकार्ड पर लिखा है, 'मैं हिंदुस्तान हूं और मैं इस घटना से शर्मिंदा हूं।'

वहीं, मिनी माथुर ने भी हाथ में प्लेकार्ड लेकर तस्वीर पोस्ट कर नाराजगी जाहिर की है। तस्वीर को ट्वीट कर मिनी ने लिखा, हमारा दिल गुस्से और आंसू से जल रहा है। गुल पनाग ने भी कुछ इसी तरह गुस्से का इजहार किया है। उन्होंने भी ट्वीट कर लिखा, 'मैं हिंदुस्तान हूं, मैं शर्मिंदा हूं, पीड़िता के लिए न्याय की दरकार, 8 साल की बच्ची का गैंगरेप! हत्या! 'देवी'-स्थान कठुआ। हुमा ने भी ट्वीट कर लिखा, 'मैं हिंदुस्तान हूं, मैं शर्मिंदा हूं', पीड़िता के लिए न्याय की दरकार, 8 साल की बच्ची का गैंगरेप! हत्या! 'देवी'-स्थान कठुआ।

आसिफा को न्याय दिलवाने के लिए उठी हर आवाज का स्वागत किया और किया भी जाना चाहिए। किसी भी सभ्य समाज में

किसी भी तरह के अपराध के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अगर किसी एक व्यक्ति के साथ भी कुछ गलत होता है, तो पुरजोर ताकत के साथ उसका विरोध किया ही जाना चाहिए, ताकि कोई दूसरा इस तरह के अपराध को अंजाम देने का साहस न जुटा पाए। मगर एक ही तरह के अपराध में विरोध के सुर और तरीके बदल कैसे सकते हैं। अगर नन्ही आसिफा के साथ दुष्कर्म के बाद हत्या हुई तो श्रद्धा का मामला उससे भी कहीं गंभीर है। यहां उसके शरीर के एक-दो नहीं 35 टुकड़े किए गए। जहां मजहबी सनक दरिंदे अफताब के मन-मस्तिष्क को इस अपराध को अंजाम देने के लिए उकसा रही थी। फिर आसिफा के पक्ष में खड़ी हुई बालीवुड हस्तियां श्रद्धा मामले में खामोश क्यों रहीं।

ट्विंकल खन्ना खन्ना की ही बात करें तो आसिफा मामले में विरोध का झंडा खूब जोर लगाकर फहराया था। सोशल मीडिया पर निरंतर एक अभियान चलाए रखा। इतने से भी जब मन नहीं भरा तो बेटे आरव के साथ मंबई की सड़कों पर उतरकर आवाज को खूब बुलंद किया। मगर उनका यह दोगलापन तब हैरान कर गया कि श्रद्धा दुष्कर्म मामले में आज तक उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम आउंट पर एक भी पोस्ट कर श्रद्धा के लिए न्याय नहीं मांगा...

ट्विंकल खन्ना खन्ना की ही बात करें तो आसिफा मामले में विरोध का झंडा खूब जोर लगाकर फहराया था। सोशल मीडिया पर निरंतर एक अभियान चलाए रखा। इतने से भी जब मन नहीं भरा तो बेटे आरव के साथ मंबई की सड़कों पर उतरकर आवाज को खूब बुलंद किया। मगर उनका यह दोगलापन तब हैरान कर गया कि श्रद्धा दुष्कर्म मामले में आज तक उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम आउंट पर एक भी पोस्ट कर श्रद्धा के लिए न्याय नहीं मांगा। लंदन की गलियों में आनंद की वीडियो तो शेयर किए, मगर श्रद्धा के प्रति एक बार भी संवेदना जाहिर नहीं हुई। ऐसा भी नहीं है कि अब वह सोशल मीडिया पर निष्क्रिय हो गई हों। श्रद्धा मामले के उदघाटित होने के बाद वह लगातार पोस्ट डाल रही हैं। अब तक छह पोस्ट उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम आउंट पर साझा कीं, मगर श्रद्धा के लिए ढूंढे कोई पोस्ट नहीं मिली।

दरअसल, साम्यवादी और लिबरल गैंग का मकसद रहा है कि हिंदुस्तान, हिंदुत्व और इसकी पहचान से जुड़े पवित्र प्रतीकों को किसी भी बहाने खंडित किया जा सके। आसिफा मामले में जब विरोध करना था तो जानबूझकर 'मैं हिंदुस्तान हूं, मैं शर्मिंदा हूं' का नारा उछालकर इस पहचान को धूमिल करने का कुत्सित प्रयास किया गया। '8 साल की बच्ची का गैंगरेप! हत्या! 'देवी'-स्थान कठुआ।'

इस तरह के एजेंडे को बढ़ाकर यह बताने की कोशिश की गई कि देवी के स्थान अब लड़कियों के लिए सुरक्षित नहीं रह गए हैं। लिहाजा अब वहां अपनी आस्था के चलते जाना गलत ही नहीं, आपकी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिहाज से भी खतरे से खाली नहीं है। 'स्वच्छ भारत से पहले सुरक्षित भारत' के बहाने आरोपियों को सजा देने के बजाय केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नफरत को बढ़ाया गया। दरअसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं इनके एजेंडे में फिट नहीं बैठते, लिहाजा आसिफा के बहाने उन्हें नरेंद्र मोदी को घेरने का भी अवसर मिल गया। संक्षेप में समझने का प्रयास करें तो बालीवुड की चयनित विरोध करने वाले लोगों के इस चयनित विरोध के चोले में कई छद्म और धर्म-राष्ट्रविरोधी एजेंडे छिपे होते हैं। आसिफा मामले में विरोध से वे सारे एजेंडा आगे बढ़ते हुए दिख रहे थे, इसलिए मुखर विरोध हुआ। सिर्फ आरोपियों ही नहीं, उस एक मामले के बहाने भारत की पहचान से जुड़े पवित्र प्रतीकों को भी धूमिल करने का अरसंभव प्रयास हुआ। इसके उलट श्रद्धा मामले में उनके किसी निहितार्थ की पूर्ति होती नहीं दिखी। इसलिए इनके मुंह से लेकर सोशल मीडिया अकाउंट्स तक पर जबरदस्त खामोशी छाई रही।

चयनित विरोध के रूप में इनकी छिपी हुई मंशाओं से अब देश की जनता अच्छे से वाकिफ हो रही है। हाल के समय में बालीवुड की कुछ फिल्में बहिष्कार अभियान से बुरी तरह पिटीं, तो उनके छिपे संकेतों को भी इन्हें समझ लेना होगा, अन्यथा बालीवुड के जिस काम से उन्हें यह पहचान, स्वीकार्यता और संसाधन मिले हैं, वे कारोबार के रूप में ही इन्हें उपलब्ध होते आए हैं।

फिल्मों के फ्लॉप होने का सिलसिला इन्हें कतई रास नहीं आएगा। इससे भी बड़ा खतरा एक कलाकार के रूप में इनकी व्यक्तिगत विश्वसनीयता के लिए पैदा होना तय है।

नील गगन में नीली चिड़िया

❐ नागराज

1950 के दौर में पत्रकारिता के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए जा रहे थे। इन्हीं प्रयोगों में से एक था वर्ष 1954 का 'वोक्स पॉप'। लैटिन भाषा के शब्द वोक्स पॉप का अर्थ है, जनता की आवाज। अमेरिका में एक पत्रकार रहे हैं स्टीफन वेलेंटाइन पैट्रिक विलियम एलन। इन्हें 'वोक्स पॉप' का जनक कह दें, तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। एलन ने 1954 में एक टेलीविजन कार्यक्रम करने का अनूठा प्रयोग किया। उस दौर में यह प्रयोग अनूठा ही कहलाया, क्योंकि यह बाकी टीवी कार्यक्रमों के लिए एक तरह से मानक बना। टेलीविजन पर देर रात प्रसारित होने वाले इस कार्यक्रम का नाम था, 'द टुनाइट शो'। इस कार्यक्रम के लिए एलन दिन भर अमेरिका की सड़कों पर अपने कैमरामैन और माइक के साथ अलग-अलग जगहों पर खड़े रहते थे। एलन उस रास्ते से आने-जाने वाले लोगों से किसी एक मुद्दे पर सवाल करते और बदले में जो भी जवाब मिलता उसे उसी रूप में रात को प्रसारित कर देते। यानी संदेश को लेकर किसी तरह की छेड़खानी नहीं। सवाल जो पहले से तय रहता था, उस पर अलग-अलग आयु, आय, लिंग, वर्ग, समुदाय के लोगों के तरह-तरह के जवाब मिलते। उनमें गंभीरता भी होती थी और हास्य भी। कार्यक्रम का उद्देश्य भी यह था कि आम लोगों के अलग-अलग विचार और प्रतिक्रियाओं को जाना जाए।

बहुत कम समय में इस कार्यक्रम ने बहुत सारी लोकप्रियता बटोरी। इसी कार्यक्रम की तर्ज पर अन्य न्यूज टेलीविजन चैनल भी इस तरह के कार्यक्रम करने लगे। तब तक 'वोक्स पॉप' यानी जनता की आवाज शब्द खूब प्रचलन में आ गया था।

1950 के दौर में पत्रकारिता के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए जा रहे थे। इन्हीं प्रयोगों में से एक था वर्ष 1954 का 'वोक्स पॉप'। लैटिन भाषा के शब्द वोक्स पॉप का अर्थ है, जनता की आवाज। अमेरिका में एक पत्रकार रहे हैं स्टीफन वेलेंटाइन पैट्रिक विलियम एलन। इन्हें 'वोक्स पॉप' का जनक कह दें, तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी...

आजकल वोक्स पॉप से जुड़ा एक और शब्द खूब चर्चा में है। शब्द है, 'वोक्स पॉपुली, वोक्स दई'। लैटिन भाषा के इस शब्द का अर्थ है, 'जनता की आवाज, भगवान की आवाज।'

यह शब्द सबसे पहले 1709 ईसवी के आसपास प्रचलन में आया था। व्हिग ट्रैक्ट जो कि एक राजनीतिक गुट था, के दौर में यह शब्द उपयोग में लाया गया था। हालांकि, बाद में इस शब्द को जब विस्तार दिया गया, तो इसमें राजाओं और लोगों के अधिकार और उनकी शक्तियों को परिभाषित किया गया। 'वोक्स पॉपुली, वोक्स देई' शब्द आजकल अंतरराष्ट्रीय अखबारों, मीडिया चैनलों, न्यूज वेबसाइट से लेकर सोशल मीडिया तक खूब छाया हुआ है। इसका कारण है, 'एलन मस्क'। दुनिया के सबसे अमीर आदमी, टेस्ला और स्पेस-एक्स के बाद अब माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट 'ट्विटर' के नए मालिक। इन्हीं के कारण यह शब्द एक बार फिर प्रचलन में आया है।

ट्विटर अधिग्रहण के लगभग 9 दिन पहले यानी 19 अक्टूबर को एलन मस्क ने एक ट्वीट कर कहा था, 'वोक्स पॉपुली, वोक्स देई।' उस समय तक इस शब्द की कोई खास चर्चा मीडिया में नहीं हुई थी। हालांकि सोशल मीडिया में इस शब्द का अर्थ लोग अंग्रेजी भाषा में जरूर बताने लग गए थे। अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी तब तक यह अंदाजा किसी को नहीं था कि इस शब्द के क्या मायने हैं। एलन मस्क द्वारा कहे गए इस शब्द के क्या मायने हैं, इसका

पता उस समय चला जब अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट 22 महीने तक स्थायी रूप से बंद रहने के बाद ब्लू टिक और अपने पुराने फॉलोवर की संख्या के साथ ट्विटर पर वापस आ गया।

दरअसल, एलन मस्क ने ट्विटर पर 24 घंटे के लिए एक पोल रखा था। पोल यानी एक तरह से जनमत संग्रह। इस जनमत संग्रह में एलन मस्क ने पूछा था कि डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट वापस आना चाहिए या नहीं। इस जनमत संग्रह में दुनियाभर के डेढ़ करोड़ से भी अधिक ट्विटर यूजर्स ने भाग लिया और अधिकांश जनता ने डोनाल्ड ट्रंप के अकाउंट की वापसी के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया। डोनाल्ड ट्रंप के अकाउंट की वापसी के बाद एलन मस्क ने ट्वीट कर कहा था कि वोक्स पॉपुली, वोक्स देई। यानी जनता ने जो कहा, वह माना गया। ट्विटर के इतिहास में यह पहली बार था, जब जनता के कहने पर किसी यूजर, वह भी अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति, जिनके खिलाफ राष्ट्रपति चुनाव के दौरान और उसके बाद भी पूरा अमेरिकी मीडिया और पूरी सिलिकॉन वैली ने सुनियोजित तरीके से एक तरह का अभियान चला रखा था।

ट्विटर के आधिकारिक मालिक बनने के बाद जब एलन मस्क सैन फ्रांसिस्को में ट्विटर के मुख्य कार्यालय में प्रवेश करते हैं, तो वह बाथरूम या रसोई घर में उपयोग किए जाने वाले सिंक को अपने हाथ में लिए वीडियो बनवाते हुए, ट्वीट करते हैं, 'लेट दैट सिंक इन'...

जनमत संग्रह के इस अभियान को एलन मस्क जारी रखा है। एक बार फिर एलन ने ट्विटर यूजर्स की वापसी का प्रश्न रखा। एलन मस्क ने कहा कि क्या ट्विटर को निलंबित खातों के लिए सामान्य माफी की पेशकश करनी चाहिए। इस प्रश्न के उत्तर में भी अधिकतम जनता ट्विटर अकाउंट की वापसी के पक्ष में गई। एक बार फिर एलन मस्क ने वोक्स पॉपुली, वोक्स देई शब्द को दोहराते हुए जनता से समय मांगा है। इस लेख के लिखने तक यह समय बरकरार है।

एलन मस्क के इस ट्वीट के बाद अंतरराष्ट्रीय मीडिया एक तरह से असहज महसूस करने लगा। इसके पीछे का कारण यह था कि ट्विटर पर अब उन लोगों की वापसी हो सकती है जो पश्चिमी मीडिया और उसके तंत्र में उचित नहीं बैठते हैं। जिन्हें पश्चिमी मीडिया की कवरेज में जगह मिलना तो दूर, सूचना या अभिव्यक्ति के किसी भी माध्यम की पहुंच से वे हाशिए पर धकेल दिए गए थे। भारत में उदाहरण के तौर पर 'ट्रू इंडोलॉजी'।

ट्विटर के आधिकारिक मालिक बनने के बाद जब एलन मस्क सैन फ्रांसिस्को में ट्विटर के मुख्य कार्यालय में प्रवेश करते हैं, तो वह बाथरूम या रसोई घर में उपयोग किए जाने वाले सिंक को अपने हाथ में लिए वीडियो बनवाते हुए, ट्वीट करते हैं, 'लेट दैट सिंक इन।' इसका अर्थ था कि लंबे

ट्विटर के आधिकारिक मालिक बनने के एक दिन पहले एलन मस्क ने कहा था कि ट्विटर के बारे में एक खूबसूरत बात यह है कि यह नागरिक पत्रकारिता को सशक्त बनाता है। यहां पर लोग बिना पूर्वाग्रह के समाचार का प्रसार कर सकते हैं। एलन मस्क के ये शब्द ठीक उसी तरह हैं, जिस तरह वे वोक्स पॉपुली, वोक्स देई कहते हैं। 'द बर्ड इज फ्री' अर्थात चिड़िया अब मुक्त है...

समय तक ट्विटर की खरीद-बिक्री के संबंध में अलग-अलग स्तर और माध्यमों पर चली विभिन्न तरह की बातचीत के बाद आखिरकार सब संपन्न हुआ।

हालांकि, यह तो शुरुआत हुई है, ट्विटर पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की, जिसके पैरोकार एलन मस्क हमेशा से रहे हैं। ट्विटर का सौदा पक्का होते ही एलन ने शीर्ष तीन अधिकारियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया। तत्कालीन सीईओ पराग अग्रवाल और विजया गड्डा, जिन्होंने ट्रंप के ट्विटर अकाउंट के निलंबन में अहम भूमिका निभा रही थीं, को तत्काल प्रभाव से नौकरी से निकाल दिया गया। यह ट्विटर पर लोगों के विश्वास को पुन: प्राप्त करने के लिए अति आवश्यक था, क्योंकि ट्विटर पर लगातार पक्षपात और भेदभाव के आरोप लगते रहे हैं।

ट्विटर के ही कर्मचारियों और इंजीनियरों के कई वीडियो आज भी सोशल मीडिया पर उपलब्ध हैं, जो यह कहते हुए देखे जा सकते हैं कि वे किस तरह दक्षिणपंथ से जुड़ी सामग्री और अकाउंट्स को ही आमतौर पर सेंसर करते थे।

ट्विटर के आधिकारिक मालिक बनने के एक दिन पहले एलन मस्क ने कहा था कि ट्विटर के बारे में एक खूबसूरत बात यह है कि यह नागरिक पत्रकारिता को सशक्त बनाता है। यहां पर लोग बिना पूर्वाग्रह के समाचार का प्रसार कर सकते हैं। एलन मस्क के ये शब्द ठीक उसी तरह हैं, जिस तरह वे वोक्स पॉपुली, वोक्स देई कहते हैं। 'द बर्ड इज फ्री' अर्थात चिड़िया अब मुक्त है। एलन मस्क का यह ट्वीट, ट्विटर कार्यालय पहुंचने के एक दिन बाद आता है। तब से लेकर अब तक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिहाज से सब कुछ सकारात्मक ही रहा है। आगे देखने वाली बात यह होगी कि नील गगन में नीली चिड़िया किस ओर उड़ती है और वोक्स पॉपुली, वोक्स देई को एलन मस्क कितना चरितार्थ करते हैं।

कंतारा : फिल्म बताती है कि परंपराएं तोड़ने और छोड़ने के लिए नहीं, सेलिब्रेट करने के लिए हैं!

❐ डॉ. जयप्रकाश सिंह

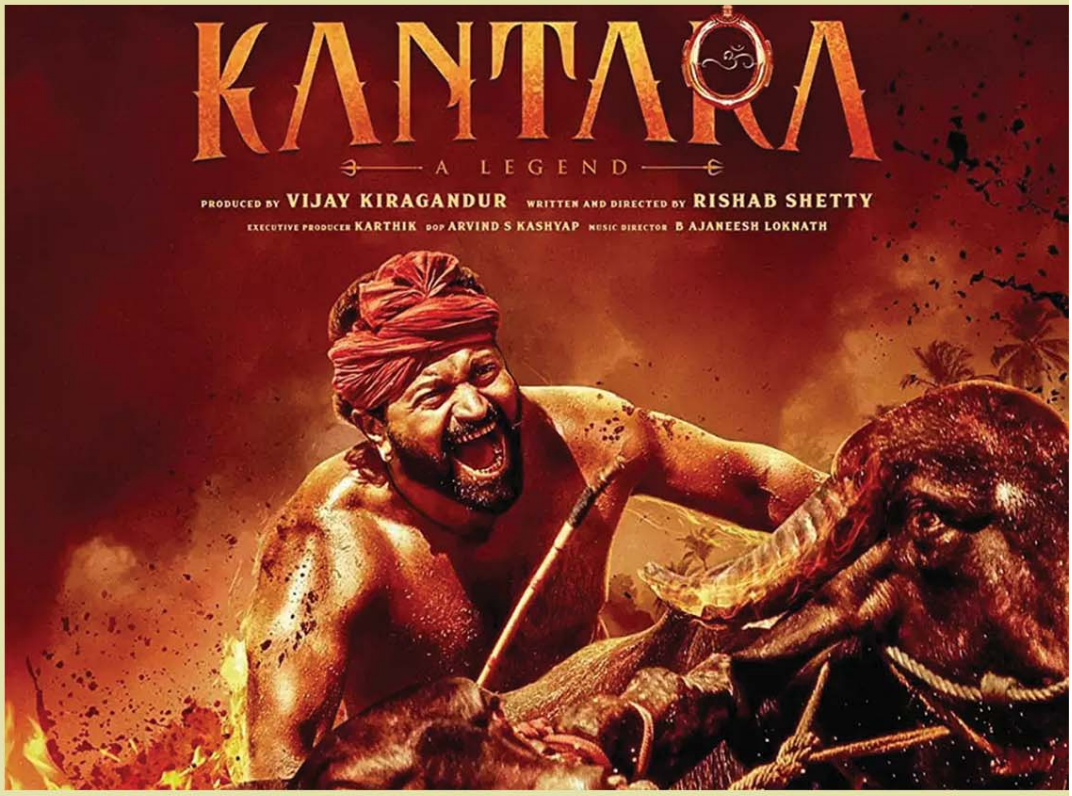

फिल्मी दुनिया में परंपराओं को पिछड़ेपन की निशानी के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है और उन्हें तोड़ने और छोड़ने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है। परंपराओं को गुजरे हुए समय का उत्पाद मानने के इस दृष्टिकोण के कारण सदियों से संचित ज्ञान और अनुभव से तो समाज वंचित हुआ ही, भावी पीढ़ी में नकल और आत्महीनता की ग्रंथि भी घर कर गई। फिल्मों में परंपराओं को इस तरह से परोसने से समाज और परिवार व्यवस्था किस तरह प्रभावित हुई है, यह एक स्वतंत्र अध्ययन का विषय है।

परंपराओं के प्रति इस दृष्टिकोण को कंतारा की कहानी चुनौती देती है और उसकी अपार सफलता यह बताती है कि दर्शक अब भी अपनी परंपराओं को अपने जीवन का हिस्सा मानता है और उसके सेलिब्रेट करता है। लोक-देवताओं के विषय को देखने के लिए पूरा भारत जिस तरह झंकृत हुआ, वह बताता है कि बिखराव और तथाकथित आधुनिकता के बीच अब भी परंपराएं मानस में बनी हुई हैं। यदि उनको थोड़ा सा भी स्पर्श किया जाता है तो वह जीवंत होकर बहने लगती हैं।

कंतारा की सफलता का एक कारण यह भी है कि लोक-देवता की संकल्पना किसी न किसी रूप मे पूरे भारत में फैली हुई है। आज भी शादी-विवाह, उत्सव आदि में लोक-देवता की महती उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है। भारतीय लोक को समझने वाले यह भी जानते हैं कि व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रसन्नता के लिए प्रत्येक वर्ष लोक-देवताओं की पूजा-अर्चना के अनुष्ठान नियमित रूप से किए ही जाते हैं। कंतारा फिल्म की भी केंद्रीय विषयवस्तु यही है।

कंतारा की सफलता का एक कारण यह भी है कि लोक-देवता की संकल्पना किसी न किसी रूप मे पूरे भारत में फैली हुई है। आज भी शादी-विवाह, उत्सव आदि में लोक-देवता की महती उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है...

कंतारा की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इसमें परंपरा को रूढ़ि के रूप में नहीं प्रस्तुत किया गया है। फिल्म में परंपरा को एक ऐसी चिंतनधारा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो नई परिस्थितियों से उपजी चुनौतियों का सामना करने और आगे का रास्ता बनाने में न केवल तत्पर है बल्कि सक्षम भी है। फिल्म के अंतिम दृश्य में जिस तरह से स्थानीय प्रतिनिधि को पुलिस के साथ मिलजुलकर जंगल को बचाने को संदेश दिया जाता है, उसमें परंपरा को भविष्य की आवश्यकता के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है। फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता परंपरा और उसके मर्म को सफलतापूर्वक पर्दे पर उतारना है। हाल ही में, आदिपुरुष के टीजर देखने के बाद यह तथ्य स्पष्ट हो गया था कि भारी-भरकम बजट के बावजूद यदि निर्माता परंपराओं के मर्म में प्रवेश न कर पाए तो सिनेमाई दुर्घटना घटित हो जाती है। कंतारा में परंपरा अपने पूरे वैभव के साथ अभिव्यक्ति हुई है। विशेषकर बीच में लोक-देवता की आवाज जिस तरह से अभिव्यक्त हुई है, वह पर्दे पर तो गुंजती ही है, दर्शकों के दिमाग में भी लंबे समय तक गूंजती रहती है। कंतारा का हर फ्रेम परंपरा को सेलिब्रेट करता है और यही उसका संदेश भी है। कंतारा का एक सिनेमाई परंपरा मे तब्दील होना सिनेमा ही नहीं, सामाजिक दृष्टि से भी जरूरी है।

ट्विटर पर विश्वसनीयता का प्रतीक ब्लू टिक अब एक नए रंग-रूप में मिलने जा रहा है। वैरिफाइड अकाउंट्स के लिए यूजर को अब तक निःशुल्क मिलने वाला ब्लू टिक अब हर महीने 8 डॉलर यानी करीब 660 रुपए देकर मिलेगा...

कीमत चुकाकर मिलेगा भरोसे का ब्लू 'टिक'

❐ **डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल**

माइक्रो-ब्लोगिंग साइट ट्विटर मालिकाना हक से लेकर पोलिसी के स्तर पर बड़े बदलावों को लेकर चर्चाओं में है। हाल ही में टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ट्विटर के नए मालिक बने हैं। उसके बाद उन्होंने कंपनी की नीति से लेकर शीर्ष प्रशासनिक पदों पर तैनाती को लेकर कई अहम बदलाव किए हैं। ऐसा ही एक बड़ा बदलाव ब्लू टिक को लेकर किया है। ट्विटर पर विश्वसनीयता का प्रतीक ब्लू टिक अब एक नए रंग-रूप में मिलने जा रहा है। वैरिफाइड अकाउंट्स के लिए यूजर को अब तक निःशुल्क मिलने वाला ब्लू टिक अब हर महीने 8 डॉलर यानी करीब 660 रुपए देकर मिलेगा। यह चार्ज सभी देशों में अलग-अलग होगा। 27 अक्तूबर को ट्विटर खरीदने के पांच दिन बाद एलन मस्क ने इसका ऐलान किया। एलन मस्क ने कहा कि फीस सभी देशों में अलग-अलग हो सकती है। फीस उस देश की पर्चेजिंग पावर और कैपेसिटी पर निर्भर रहेगी।

क्या होता है ब्लू टिक

ट्विटर पर इस ब्लू टिक का मतलब होता है कि आपका ट्विटर अकाउंट वेरिफाइड है और फेक नहीं है। यह ब्लू टिक इसलिए दिया जाता है ताकि ऐसे लोगों के रियल अकाउंट के बारे

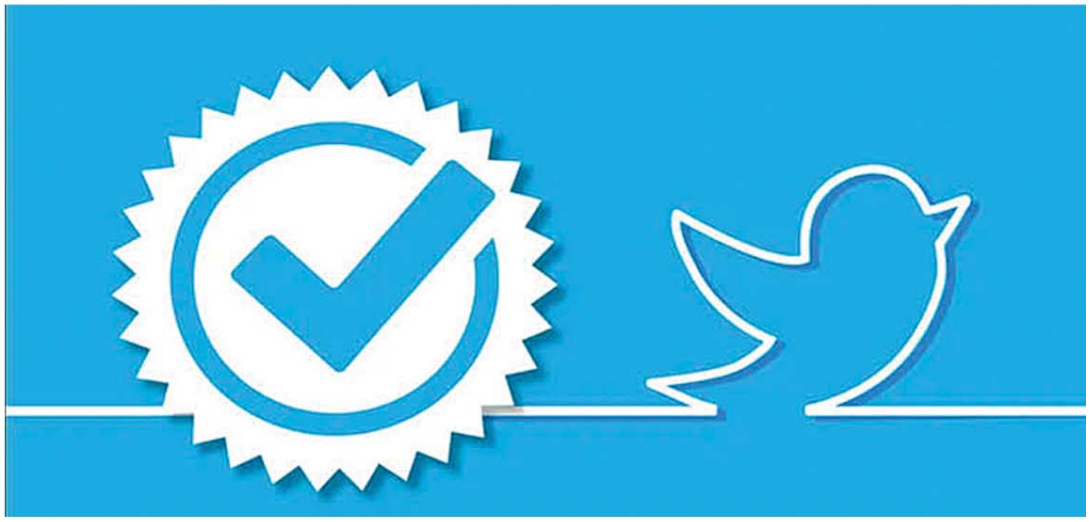

में लोगों को पता रहे और वे किसी फर्जी अकाउंट के संपर्क में आने से बच सकें। दुनिया भर में करोड़ों लोगों अपने विचारों को साझा करने के लिए ट्विटर अकाउंट बनाया है, मगर अब तक केवल एक लाख के करीब अकाउंट्स ही वेरीफाइड हैं।

अलग-अलग रंग के टिक दिए जाएंगे

ट्विटर के मालिक ऐलन मस्क ने ट्वीट कर जानकारी दी है कि अब कंपनी से लेकर सरकारी संस्थानों तक को अलग-अलग तरह के टिक दिया जाएगा। एक ट्विटर यूजर के ट्वीट का रिप्लाई करते हूए मस्क ने कहा कि देरी के लिए क्षमा करें। हम अस्थायी रूप से अगले सप्ताह शुक्रवार को वेरिफिकेशन की सुविधा लॉन्च कर रहे हैं। कंपनियों के लिए गोल्ड चेक, सरकार के लिए ग्रे चेक, व्यक्तियों के लिए नीला (सेलिब्रिटी या नहीं) चेक दिया जाएगा। यह दर्दनाक है लेकिन जरूरी है। इसे शुरू करने से पहले सभी वेरिफाइड खातों को मैन्युअल रूप से ऑथेंटिकेटेड किया जाएगा।

दुरुपयोग के बाद रोकी गई सेवा

ट्विटर का अधिग्रहण करते ही मस्क ने पेड ब्लू टिक सब्सक्रिप्शन की घोषणा की थी, लेकिन शुरू के दो दिन में ही लोगों ने इस सर्विस का मिसयूज किया। इसके बाद कंपनी ने पेड सब्सक्रिप्शन को रोक दिया था। कंपनी ने कहा था कि कुछ सिक्योरिटी और प्राइवेसी पॉलिसी को मजबूत कर इसे फिर से 29 नवंबर को लॉन्च किया जाएगा। अभी भी ट्विटर के सामने इस प्लान में सुरक्षा संबंधी कई चिंताएं हैं, जिसे दूर किए बिना कंपनी इसे फिर से लॉन्च नहीं करना चाहती।

सभी सस्पेंड ट्विटर अकाउंट की होगी वापसी

एलन मस्क ने ट्विटर पर बैन अकाउंट वाले यूजर्स के लिए एक बड़ा फैसला लिया है। अब मस्क सस्पेंड हुए अकाउंट फिर से शुरू किए जाएंगे। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ट्विटर हैंडल को बहाल करने के बाद अन्य निलंबित अकाउंट को माफी देकर उनकी बहाली भी शुरू की जाएगी। यह फैसला लेने के पहले मस्क ने पोल करके लोगों से अपनी राय मांगी थी। 24 नवंबर को मस्क ने एक पोल क्रिएट किया था। इसमें पूछा गया था क्या ट्विटर को निलंबित अकाउंट को 'सामान्य माफी' देनी चाहिए। इस पर 72.4 फीसदी लोगों ने हां में जवाब दिया।

प्रामाणिकता का भरोसा है टिक

ब्लू टिक का मतलब सीधा वेरिफिकेशन से होता है। यानी कि अगर किसी पेज या प्रोफाइल पर ब्लू टिक है तो इसका मतलब है कि वह पेज या अकाउंट उस ब्रांड या व्यक्ति का ऑथेंटिक पेज या प्रोफाइल है। ब्लू टिक या वेरिफाइड बैज पाने के लिए यूजर्स को अप्लाई करना होता है। ब्लू टिक वाले अकाउंट और प्रोफाइल की वेल्यू अन्य पेज या प्रोफाइल की अपेक्षा अधिक होती है।

मस्क ने 3,368 अरब रुपए में खरीदा था ट्विटर

हाल ही में टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ट्विटर के नए मालिक बने थे। मस्क ने इस माइक्रो ब्लॉगिंग साइट को खरीदने के लिए 44 बिलियन डॉलर यानी 3,368 अरब रुपए की डील की हैं। उनके पास पहले से ही ट्विटर में 9 फीसदी की हिस्सेदारी मौजूद है। नई डील के बाद उनके पास कंपनी की 100 फीसदी हिस्सेदारी होगी और ट्विटर उनकी प्राइवेट कंपनी बन जाएगी। माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर सोशल मीडिया जगत का एक प्रभावशाली मंच है। इसकी अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि दुनियाभर में इसके 21.7 करोड़ एक्टिव यूजर्स हैं। इनमें सबसे ज्यादा 7.7 करोड़ अमेरिका में हैं। दूसरे नंबर जापान है, जहां 5.8 करोड़ लोग ट्विटर इस्तेमाल करते हैं। वहीं, 2.4 करोड़ यूजर्स के साथ भारत का नंबर तीसरा है। दुनियाभर में हर दिन करीब 50 करोड़ ट्वीट किए जाते हैं। खास बात यह है कि ट्विटर के 38 फीसदी यूजर्स युवा हैं। इनकी उम्र 25 से 30 साल के बीच है।

ट्विटर पर अभिव्यक्ति की आजादी के हिमायती हैं मस्क

एलन मस्क दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी हैं। वे फ्रीडम ऑफ स्पीच के तरफदार हैं। ट्विटर को खरीदने की अपनी मंशा के पीछे भी उन्होंने यही वजह बताई थी कि इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फ्रीडम ऑफ स्पीच खतरे में है और वे सुनिश्चित करना चाहते हैं कि यह बनी रहे। एलन मस्क ने ट्वीट कर यह भी कहा है कि ट्विटर पर फिलहाल ब्लू टिक देने का मौजूदा सिस्टम ठीक नहीं है। ट्विटर ब्लू टिक के जरिए उन्होंने सभी लगों को एकसमान पावर देने की बात कही।

1. शंघाई में विरोध-प्रदर्शन कवर कर रहे बीबीसी पत्रकार एडवर्ड लॉरेंस पर हमला

बीबीसी के पत्रकार को चीन के शंघाई शहर में उस वक्त गिरफ्तार कर लिया गया, जब वह वहां हो रहे विरोध प्रदर्शन की रिपोर्टिंग कर रहा था। बीबीसी ने चीन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि वहां मौजूद पुलिसकर्मियों ने उसको गिरफ्तार करने से पहले उसको रिपोर्टिंग से रोकने की कोशिश की और उसके साथ मारपीट भी की थी। शंघाई समेत चीन के दूसरे शहरों में ये विरोध-प्रदर्शन चीन की जीरो कोविड नीति के खिलाफ हो रहे हैं।

चीन के बिजनेस हब कहे जाने वाले शंघाई में हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान बीबीसी के पत्रकार की गिरफ्तारी और पिटाई के मामले में दोनों ही देश अब आमने-सामने आ गए हैं। वहीं, पत्रकारिता को दबाने के इस प्रयास के बाद दुनिया भर में चीनी रवैये की कड़ी निंदा हो रही है। बीबीसी प्रवक्ता ने कहा है कि वह एड लॉरेंस के इलाज के बारे में बेहद चिंतित है। लॉरेंस को शंघाई में विरोध प्रदर्शन को कवर करते हुए गिरफ्तार किया गया था। उन्हें हथकड़ी लगाई गई।

चीन के बिजनेस हब कहे जाने वाले शंघाई में हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान बीबीसी के पत्रकार की गिरफ्तारी और पिटाई के मामले में दोनों ही देश अब आमने-सामने आ गए हैं। वहीं, पत्रकारिता को दबाने के इस प्रयास के बाद दुनिया भर में चीनी रवैये की कड़ी निंदा हो रही है। बीबीसी प्रवक्ता ने कहा है कि वह एड लॉरेंस के इलाज के बारे में बेहद चिंतित है...

गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने उन्हें पीटा और लात मारी। यह तब हुआ जब वह एक मान्यता प्राप्त पत्रकार के रूप में काम कर रहे थे। बीबीसी ने कहा कि उन्हें लॉरेंस की हिरासत के लिए विश्वसनीय स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।

उधर, चीन के एक अधिकारी ने पत्रकार को रिहा करने के बाद कहा कि उन्हें उनकी भलाई के लिए ही पकड़ा गया था, ताकि वे भीड़ से कोरोना संक्रमण की चपेट में न आ जाएं। वहीं, चीन के विदेश मंत्रालय ने इस मामले में जहां कहा है कि पत्रकार ने अपनी पहचान को उजागर नहीं किया था, वहीं दूसरी तरफ ब्रिटेन की तरफ से कहा गया है कि वो इस मामले में किसी बहानेबाजी को बर्दाश्त नहीं करेगा। ब्रिटेन के मंत्री ने इस बारे में दिए एक बयान में इस पूरे

बता दें कि चीन में कोरोना वायरस का तेजी से प्रसार हो रहा है। सरकार ने बीजिंग और शंघाई समेत कई प्रांतों में कड़े कोविड प्रतिबंध लागू किए हैं। अब लोग सरकार की कोविड नियंत्रण पॉलिसी से नाखुश नजर आ रहे हैं और सड़कों पर उतरकर विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं...

घटनाक्रम को निंदनीय बताया और कहा कि इस मामले में माफी से काम नहीं चलने वाला है। न ही ब्रिटेन किसी भी तरह के बहाने सुनेगा।

2. 48.7 करोड़ व्हाट्सऐप यूजर्स का डाटा हैक

इंस्टेंट मैसेजिंग ऐप व्हाट्सऐप के करोड़ों यूजर्स के डाटा को हैकर्स ने चुरा लिया है। बताया जा रहा है कि भारत, अमेरिका, सऊदी अरब और मिस्र सहित 84 देशों के यूजर्स के डाटा को हैक करके ऑनलाइन बेचा जा रहा है। दुनियाभर के करीब 48.7 करोड़ व्हाट्सऐप यूजर्स का डाटा हैक किया गया है। हैक हुए डाटा में 84 देशों के व्हाट्सऐप यूजर्स का मोबाइल नंबर भी शामिल है, जिनमें 61.62 लाख फोन नंबर भारतीयों के हैं। बता दें कि इससे पहले पिछली साल फेसबुक के 50 करोड़ से अधिक यूजर्स का डाटा भी चोरी हुआ था। रिपोर्ट के अनुसार एक हैकिंग कम्युनिटी फोरम पर विज्ञापन देकर 48.7 करोड़ व्हाट्सएप यूजर्स के मोबाइल नंबर्स की बिक्री का दावा किया गया है। बताया जा रहा है कि यह 2022 का हालिया डाटा है।

3. नौबत आई तो मैं एक वैकल्पिक फोन बनाऊंगा: मस्क

दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति, टेस्ला के सीईओ और ट्विटर के नए मालिक एलन मस्क ने कहा है कि अगर जरूरत पड़ी तो वे अपना स्मार्टफोन भी लॉन्च कर सकते हैं। एलन मस्क ने ट्विटर पर एक ट्वीट का जवाब देते हुए यह बात कही। दरअसल, वीडियो पॉडकास्ट 'द लिज व्हीलर शो' की होस्ट लिज व्हीलर ने ट्वीट किया था, 'अगर एप्पल और गूगल अपने ऐप स्टोर से ट्विटर को हटाते हैं तो एलन मस्क को खुद का स्मार्टफोन लॉन्च कर देना चाहिए। आधा देश खुशी-खुशी

पक्षपाती और जासूसी करने वाले आईफोन और एंड्रॉयड को छोड़ देगा। जो शख्स मंगल पर जाने के लिए रॉकेट बना सकता है उसे एक छोटा सा स्मार्टफोन बनाने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।' इसी ट्वीट पर प्रतिक्रिया देते हुए एलन मस्क ने लिखा, 'मुझे उम्मीद है कि ऐसी नौबत नहीं आएगी, लेकिन यदि कोई विकल्प नहीं बचा तो मैं एक वैकल्पिक फोन बनाऊंगा।'

4. अभिव्यक्ति की आजादी पसंद नहीं आई तो फ्रीडम मूवमेंट पार्टी सहित कई सेलीब्रिटीज ने छोड़ा ट्विटर

ट्विटर पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए लगातार कई बदलाव करने वाले इसके नए मालिक एलन मस्क के कई फैसले अभिव्यक्ति की आजादी के लिए अभियान छेड़ने वालों को खूब रास आ रहा है। वहीं, खुद को अभिव्यक्ति का कथित पैरोकार बताने वाले बहुतेरे संगठनों और लोगों को यह 'अभिव्यक्ति की आजादी' पसंद नहीं आ रही है। इसके लिए उन्होंने सोशल मीडिया के अन्य मंचों पर इसकी अभिव्यक्ति कर एक सुनियोजित अभियान को आगे बढ़ाने का भी प्रयास किया है।

एलन मस्क के मैनेजमेंट से निराश होकर स्लोवेनिया की सत्तारूढ़ फ्रीडम मूवमेंट पार्टी ने ट्विटर छोड़ने का फैसला किया है। फ्रीडम मूवमेंट पार्टी ने कहा कि फर्जी खबरें और अभद्र भाषा फैलाने के लिए सोशल नेटवर्क का इस्तेमाल किए जाने की चिंताओं को लेकर उसने ट्विटर का इस्तेमाल बंद करने का फैसला किया है। जीएस ने एक बयान में अरबपति एलन मस्क द्वारा ट्विटर के हाल के अधिग्रहण का जिक्र करते हुए कहा कि 'ट्विटर के नए मालिक और प्रबंधन के व्यवहार और घोषणाओं को देखते हुए हम उम्मीद कर सकते हैं कि वे अभद्र और द्वेषपूर्ण भाषा के लिए अपने दरवाजे खोलेंगे।'

वहीं, मशहूर अमेरिकी मॉडल गिगी हदीद एलन मस्क से इस कदर नाराज हैं कि उन्होंने ट्विटर छोड़ने की पोस्ट भी ट्विटर के बजाय इंस्टाग्राम पर शेयर की है। अमेरिकी सिंगर और म्यूजिशियन जैक व्हाइट ने भी ट्विटर छोड़ दिया और एलन मस्क के फैसलों की निंदा की। 20 नवंबर को उन्होंने इंस्टाग्राम पर मस्क के लिए एक लेटर शेयर किया, जिसमें पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट दोबारा चालू करने के कदम की आलोचना की गई। इसके बाद 29 अक्तूबर को ग्रैमी अवार्ड जीतने वाली सिंगर सारा बरीलेस ने ट्विटर छोड़ दिया। अमेरिकी एक्टर, कॉमेडियन, लेखक और टीवी पर्सनैलिटी ने व्हूपी गोल्डबर्ग ने भी ट्विटर छोड़ दिया है। 7 नवंबर को 'द व्यू' के एक एपिसोड में ट्विटर को अलविदा कह दिया। उन्होंने कहा कि आज रात से ट्विटर से उनका मामला पूरा हो गया है। अमेरिकी कॉमिक बुक आर्टिस्ट, राइटर और पब्लिशर एरिक लार्सेन ने भी ट्विटर छोड़ने की पुष्टि की है। सात बार ग्रैमी अवार्ड जीतने वाली अमेरिकी सिंगर टोनी ब्रेक्सटन ने ट्विटर छोड़ते हुए कहा कि वे मस्क के अधिग्रहण के बाद से कुछ कंटेंट देखकर 'हैरान और चकित' थीं।

एलन मस्क के मैनेजमेंट से निराश होकर स्लोवेनिया की सत्तारूढ़ फ्रीडम मूवमेंट पार्टी ने ट्विटर छोड़ने का फैसला किया है। फ्रीडम मूवमेंट पार्टी ने कहा कि फर्जी खबरें और अभद्र भाषा फैलाने के लिए सोशल नेटवर्क का इस्तेमाल किए जाने की चिंताओं को लेकर उसने ट्विटर का इस्तेमाल बंद करने का फैसला किया है...

5. फेसबुक की पैरेंट कंपनी मेटा ने नौकरी से निकाले 11,000 कर्मी, नई हायरिंग पर भी रोक

टेक कंपनियों में छंटनियों का सिलसिला अभी थमा नहीं है। फेसबुक की पैरेंट कंपनी मेटा प्लेटफॉर्म ने एक झटके में 11,000 कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया है। कंपनी ने कहा कि खराब वित्तीय नतीजे, खर्चों में बढ़ोतरी और कमजोर विज्ञापन बाजार के चलते वह अपने 13 फीसदी कर्मचारियों यानी

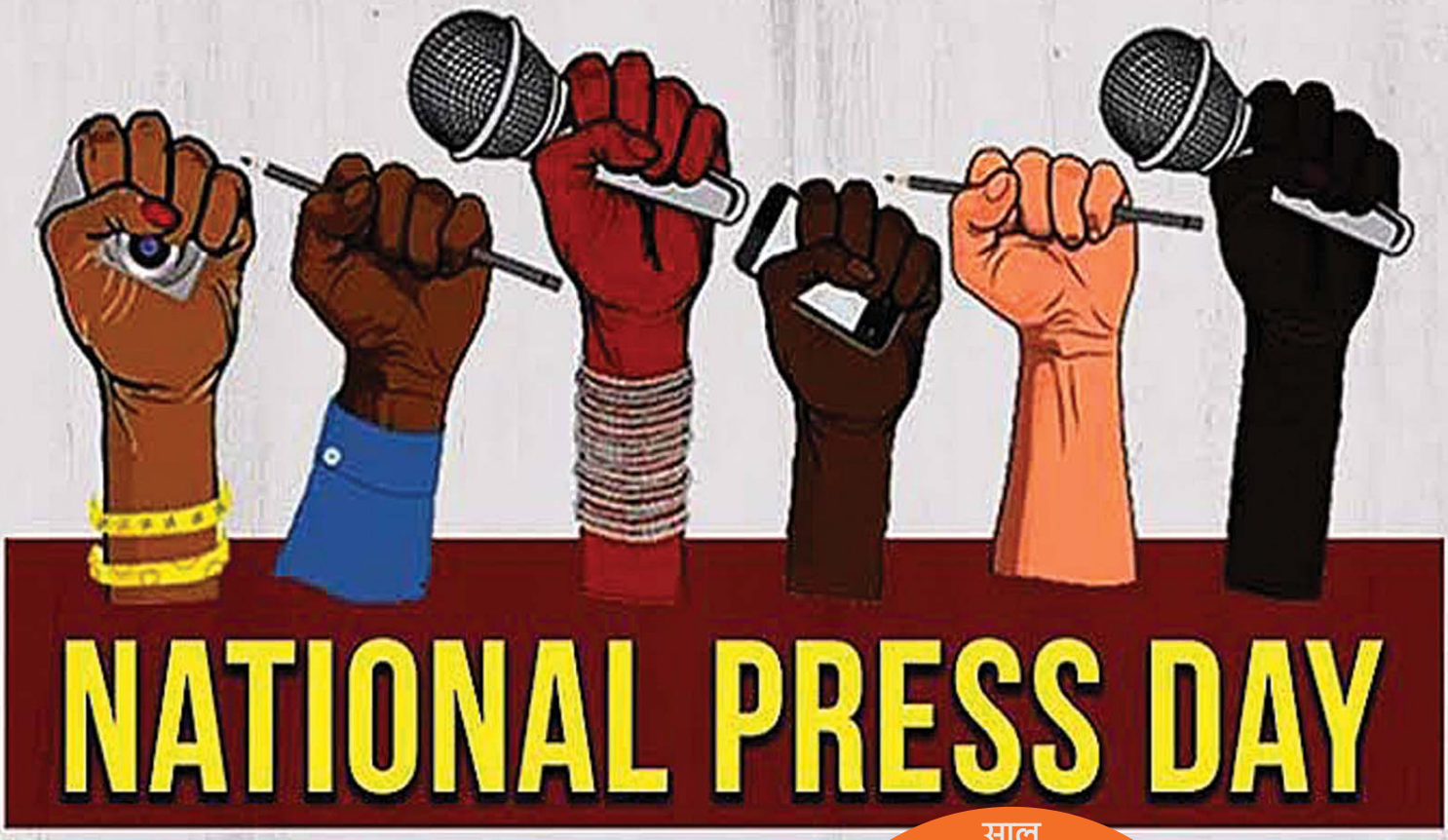

11,000 कर्मचारियों की छंटनी कर रही है। साल 2022 में किसी टेक कंपनी द्वारा की गई यह सबसे बड़ी छंटनी है। मेटा ने कहा है कि कंपनी आने वाले दिनों में नई कर्मचारियों की कोई हायरिंग नहीं करेगी। मेटा की सीईओ मार्क जुबरबर्ग ने जारी किए गए बयान में कहा, आज जो इस निर्णय पर हम पहुंचे हैं उसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूं। मैं जानता हूं कि ये सभी के लिए कठिन है। मैं उन लोगों को माफी मांगना चाहता हूं जिन पर इसका असर पड़ा है।

वहीं, मेटा, ट्विटर, अमेजन के बाद अब एचपी ने भी अपने कर्मचारियों को घर भेजने का मन बना लिया है। बताया जा रहा है कि लैपटॉप और इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरर एचपी अपने 6,000 कर्मचारियों को निकाल सकता है, लेकिन यह छंटनी एक-बार में नहीं होगी। मिली सूचना के अनुसार, 2025 तक कंपनी अपने कर्मचारियों की संख्या में 6,000 की कटौती करेगी।

विशेषज्ञों की मानें तो महामारी के दौरान पीसी और लैपटॉप सेगमेंट की बिक्री में जबरदस्त उछाल आया था, लेकिन अब यह ठंडा पड़ गया है। इसी को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने नौकरियों में कटौती का फैसला लिया है। यही हाल, बाकी कंपनियों का भी है, जिन्होंने कोरोना के वक्त लॉकडाउन और वर्क फ्रॉम होम के चलते खूब चांदी काटी और अब जबकि सबकुछ खुलने लगा है तो ये कंपनियां छंटनी कर रही हैं।

साल 2022 में किसी टेक कंपनी द्वारा की गई यह सबसे बड़ी छंटनी है। मेटा ने कहा है कि कंपनी आने वाले दिनों में नई कर्मचारियों की कोई हायरिंग नहीं करेगी। मेटा की सीईओ मार्क जुबरबर्ग ने जारी किए गए बयान में कहा, आज जो इस निर्णय पर हम पहुंचे हैं उसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूं...

6. 16 नवंबर को मनाया राष्ट्रीय प्रेस दिवस

16 नवंबर को भारत में 56वां राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया गया। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पहली बार 1966 में मनाया गया था, जब प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) की स्थापना हुई थी और देश में इसका संचालन शुरू हो गया था।

भारतीय प्रेस परिषद की शुरुआत पीसीआई की स्थापना 4 जुलाई 1966 को संसद द्वारा की गई थी, जिसका लक्ष्य 'स्वतंत्र' और साथ ही 'जिम्मेदार' प्रेस के दोहरे उद्देश्य को प्राप्त करना था। इसका संचालन शुरू करने में चार और महीने लगे, जिससे इसकी शुरुआत 16 नवंबर, 1966 को शुरुआत हुई। इस वर्ष राष्ट्रीय प्रेस दिवस की थीम 'राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका' था।